www.haryanaassembly.gov.in

प्रथम अंक, भाद्रपद विक्रमी संवत 2077, अगस्त 2020, ₹ 40

सदन संदेश

हरियाणा विधानसभा की मासिक पत्रिका

सत्यमेव जयते
हरियाणा सरकार
GOVT. OF HARYANA

सभा में या तो प्रवेश न किया जाए यदि प्रवेश किया जाए तो वहां स्पष्ट
और सच बात कही जाए, क्योंकि वहां न बोलने से या गलत बोलने से
दोनों की ही स्थितियों में मनुष्य पाप का भागी बन जाता है।

सदन-वंदना

आओ अपना फ़र्ज़ निभाएं।
मिलकर इसका मान बढ़ाएं।
मंदिर है यह लोकतंत्र का-
सदा सदन को शीश नवाएं।।

सदा सदन से रहती आशा।
सनद रहे जन-जन की अभिलाषा।
चलो खरे आशा पर उतरें-
कभी न आए यहां निराशा।।

आओ मिलकर ध्यान करें हम।
मतभेदों का मान करें हम ।
समय सदन का बड़ा कीमती-
सदा समय का सम्मान करें हम।।

मुद्दों से ना रखें दूरी।
स्वस्थ बहस है बहुत जरूरी।
रहे सदन में गरिमा हरदम-
बात सदन की तब हो पूरी।।

सदन खास है जिम्मेदारी।
जनता को उम्मीदें भारी ।
संविधान का मान सदा हो-
यादगार खेलें मिल पारी।।

- सत्यवीर नाहड़िया

प्राक्कथन

श्री ज्ञान चंद गुप्ता
माननीय अध्यक्ष, हरियाणा विधान सभा

लोकतंत्र के प्रहरी कर्मयोगियों की पुरुषार्थ गाथा

विधान सभा प्रदेश के लोगों की इच्छाओं और आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करती है। सदन उनकी अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम माध्यम है। यह लोकतंत्र का पावन मंदिर भी है। लोकतंत्र अर्थात जनता का, जनता द्वारा, जनता के लिए शासन। हमारा देश विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। संविधान निर्माताओं ने विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका को इस लोकतंत्र के प्रमुख तीन स्तम्भों के रूप में स्थापित किया है। ये तीनों स्तम्भ केंद्र और राज्य स्तर पर एक सुपरिभाषित प्रणाली के तहत कार्य करते हैं। संविधान निर्माताओं ने बहुत ही विवेकपूर्ण ढंग से राज्यों और केंद्र के बीच कार्यों व शक्तियों का बंटवारा किया है। इस शक्ति विभाजन में गहन समन्वय की भावना निहित है। कार्यों का यह बंटवारा और समन्वय इस प्रकार है कि राज्य केंद्र के अंगभूत घटक बन गए हैं। जैसे शरीर और उसके अंग एक-दूसरे के लिए पूरक होते हैं, वैसे ही हमारे संघीय ढांचे में राज्यों की भूमिका है। केंद्र और राज्यों के समन्वित प्रयास से ही अपना देश समन्वित विकास और लोक कल्याण के पावन लक्ष्य की ओर अग्रसर है।

अपने देश ने लोकतंत्र का संसदीय स्वरूप स्वीकृत किया है। इस व्यवस्था में जनता सर्वोपरि है। सीधे शब्दों में कहें तो जनता ही राजा है। राजा अपने कार्यों के लिए सांसदों और विधायकों के रूप में अपने जनप्रतिनिधि चुनता है। इन प्रतिनिधियों पर सबसे बड़ी जिम्मेदारी यह है कि राजा की आकांक्षाओं को संवेदनशीलता से समझें। उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करें तथा उसकी समस्याओं का निराकरण सुनिश्चित करें। इन सबके साथ-साथ विकास का मार्ग भी प्रशस्त करना है। अपनी इन्हीं जिम्मेदारियों के निर्वहन के लिए जनप्रतिनिधि दिन-रात एक कर देते हैं। वे सार्वजनिक जीवन में इतने डूब जाते हैं उन्हें व्यक्तिगत जीवन की सुध नहीं रहती। मैंने 4 नवंबर 2019 को विधान सभा अध्यक्ष के नाते जिम्मेदारी संभाली। विधानसभा की कार्यवाही के दौरान इन जनप्रतिनिधियों को निकट से जानने, समझने का अवसर मिला। समाज को नेतृत्व देने वाले जनप्रतिनिधि कर्मठता व बहुमुखी प्रतिभा की जीती जागती प्रतिमा हैं। वे जितनी विनम्रता से जनता की सुनते हैं उतनी ही मुखरता से अपनी बात सदन में रखते हैं।

ऐसे कर्मयोगी जनप्रतिनिधियों का समाज में कहीं अधिक सम्मान होना चाहिए। जनसाधारण के साथ-साथ बुद्धिजीवी समाज में भी उनकी प्रतिष्ठा स्थापित होनी चाहिए। तभी हम राजनीति और इसमें संलग्न व्यक्तियों की सकारात्मक छवि को प्रभावी ढंग से गढ़ सकेंगे। हरियाणा विधान सभा सचिवालय ने कुछ ऐसे ही उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पत्रिका के प्रकाशन का निर्णय लिया है। इस पत्रिका के माध्यम से संवैधानिक एवं लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास किया जाएगा। इस निमित्त हम विधानसभा की गतिविधियों व विधायी कार्यों पर तथ्यपरक सामग्री उपलब्ध करवाएंगे। इससे विधानसभा के सदस्यों और अन्य विशेषज्ञों को उनके मतों एवं दृष्टिकोणों की अभिव्यक्ति के लिए उपयोगी मंच उपलब्ध होगा। सदन के नियमों व परंपराओं पर आधारित लेख भी प्रकाशित होंगे, जिससे माननीय सदस्यों को उपयोगी जानकारी प्राप्त हो सकेगी। माननीय सदस्यों और विधानसभा सचिवालय के अधिकारियों व कर्मचारियों को लेखन के लिए प्रेरित करना भी इस पत्रिका का उद्देश्य रहेगा।

इसके साथ-साथ संपादकीय टोली समय-समय पर हरियाणा केंद्रित विषयों पर लेखन करेगी। मुझे विश्वास है कि इस माध्यम से सार्वजनिक एवं सार्वभौमिक महत्व के विषयों पर विमर्श खड़ा हो सकेगा और राजनीतिक क्षेत्र के बारे में प्रभावी एवं सकारात्मक अवधारणाएं विकसित हो सकेंगी। मेरा समस्त विधायक साथियों से आग्रह है कि वे इसे अभिव्यक्ति के मंच के रूप में प्रयोग करें और लेखन में भरपूर हाथ आजमाएं। मुझे विश्वास है यह पत्रिका हमारे जनप्रतिनिधियों की ज्ञान पिपासा शांत करने के साथ उन्हें लेखन के लिए भी प्रेरित करेगी। पत्रिका अपने उद्देश्यों में सफल हो, मैं इसके लिए मंगलकामना करता हूं।

ज्ञान चन्द

सदन संदेश

हरियाणा विधानसभा की मासिक पत्रिका

संरक्षक एवं मार्गदर्शक

श्री ज्ञान चंद गुप्ता जी
(माननीय अध्यक्ष, हरियाणा विधान सभा)

प्रकाशक

श्री राजेन्द्र कुमार नांदल जी
सचिव, हरियाणा विधान सभा सचिवालय

प्रधान संपादक

दिनेश कुमार
मीडिया एवं संचार अधिकारी, हरियाणा विधान सभा

सहयोगी

तेजपाल राठी
जन-संपर्क अधिकारी, हरियाणा विधान सभा

अंकित वत्स
अनुसन्धान अधिकारी, हरियाणा विधान सभा

नवीन भारद्वाज
अनुसन्धान अधिकारी, हरियाणा विधान सभा

सपर्क :-

सदन संदेश
हरियाणा विधान सभा सचिवालय
सेक्टर 1, चण्डीगढ़, 160001

☎ 0172-2740030
✉ itcellvs@hry.nic.in

सितम्बर — भाद्रपद-आश्विन

सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि	रवि
	1 शु.चतुर्दशी	2 भाद्रपद पूर्णिमा	3 आश्विन कृ.प्रतिपदा	4 कृ.द्वितीया	5 कृ.तृतीया	6 कृ.चतुर्थी
7 कृ.पंचमी	8 कृ.षष्ठी	9 कृ.सप्तमी	10 कृ.अष्टमी	11 कृ.नवमी	12 कृ.दशमी	13 कृ.एकादशी
14 कृ.द्वादशी	15 कृ.त्रयोदशी	16 कृ.चतुर्दशी	17 आश्विन अमावस्या	18 प्रथम अधि. आश्विन शु.प्रति.	19 शु.द्वितीया/तृतीया	20 शु.चतुर्थी
21 शु.पंचमी	22 शु.षष्ठी	23 शु.सप्तमी	24 शु.अष्टमी	25 शु.नवमी	26 शु.दशमी	27 शु.एकादशी
28 शु.द्वादशी	29 शु.त्रयोदशी	30 शु.चतुर्दशी				

बुधवार, 23 सितबर
हरियाणा वीर एवं शहीदी दिवस

इस अंक में

अच्छी शुरुआत • स्वर्णिम अध्याय लिखता हरियाणा का सदन 14

प्राक्कथन • लोकतंत्र के कर्मयोगियों की यशस्वी पुरुषार्थ गाथा 3

संदेश • शीर्ष नेतृत्व को 'सदन संदेश' से बड़ी अपेक्षाएं 5-12

संपादकीय • गीता की पावन धरती पर बसती लोकतंत्र की आत्मा 13

लॉकडाउन • अभिभावक की भूमिका में आए माननीय अध्यक्ष 17

हक की लड़ाई • विधान भवन में हरियाणा का हिस्सा लेने का प्रयास 20

कोविड-19 • विकराल विपदा का मुकाबला करती वीरों की धरती 22

पहली बार • विधायकों की पसंद पूछ कर कमेटियों का गठन 25

प्री बजट • 'सबकी राय-अच्छी राय' जानने के लिए 3 दिन मंथन 28

राम मंदिर • 5 अगस्त : भारत राष्ट्र की सांस्कृतिक स्वाधीनता 32

विधान विमर्श • पहली विधानसभा में दिए गए भाषणों के अंश 29

संविधान संकल्पना • संविधान सभा में डॉ. राजेंद्र प्रसाद का भाषण 30

आर्ष ग्रंथ • गांधी जी का राम राज्य पर इतना आग्रह क्यों था 34

स्वास्थ्य सूत्र • सार्वजनिक जीवन में जरूरी है व्यक्तिगत स्वास्थ्य 36

आधुनिक दृष्टिकोण • भारतीयता व इसके नायकों पर तिलक के विचार 38

प्रज्ञा प्रवाह • 'भारत के राष्ट्रत्व का अनंत प्रवाह' पुस्तक परिचय 39

संदेश

सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री
भारत सरकार

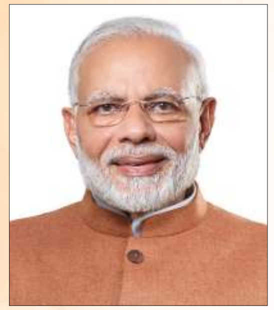

"इस पत्रिका से सदन को समझने में मदद मिलेगी"

यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि हरियाणा विधान सभा सचिवालय द्वारा मासिक पत्रिका 'सदन संदेश' का प्रकाशन शुरू किया जा रहा है। पत्रिका के प्रथम अंक के प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

हमें विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र का हिस्सा होने का गौरव प्राप्त है। देश की इच्छाओं और आकांक्षाओं को जानकर उन्हें साकार करते हुए राष्ट्र को निरंतर प्रगति की राह पर ले जाना जनप्रतिनिधियों को मिला एक विशेष दायित्व है। विधान सभा के सदस्यों में संवैधानिक मूल्यों के प्रति जागरूकता और सदन की गतिविधियों की प्रभावी समझ उन्हें अपने दायित्वों के प्रति और अधिक सजग बनाती है।

मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से सदस्यों को सदन की प्रक्रियाओं, पद्धतियों और परंपराओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलेगी। पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी लोगों को फिर एक बार बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

- नरेन्द्र मोदी

लोकतंत्र केवल सरकार का एक रूप नहीं है। वह मुख्यत: संयुक्त, पारस्परिक अनुभवों के साथ मिल-जुलकर रहने का एक तरीका है। यह मूलत: अन्य मानवों के प्रति सम्मान तथा श्रद्धा की मन: स्थिति है।
- डॉ. भीमराव अम्बेडकर

सत्यमेव जयते

उपराष्ट्रपति
भारत

"मासिक पत्रिका का प्रकाशन विधायकों और विस अधिकारियों के लिए श्रेयस्कर होगा"

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ है कि हरियाणा विधान सभा द्वारा विधान सभा की विभिन्न गतिविधियों और कार्यक्रमों के तथ्यात्मक अभिलेखन के रूप में एक मासिक पत्रिका 'सदन संदेश' का प्रकाशन प्रारम्भ किया जा रहा है जो कि एक सराहनीय प्रयास है।

विधायी कार्यवाही की सूक्ष्मताओं के अभिलेखन से विधान-कार्य अभीष्ट एवं अपेक्षित रूप में प्रकाशित होता है। सांविधिक गहनताओं और विधानसभा की कार्यान्वयन परिपाटी से सभी विधायक समयानुसार अद्यतन रहें यह अति आवश्यक है। इस हेतु की पूर्ति हेतु मासिक रूप से किसी स्तरीय पत्रिका का प्रकाशन किया जाना वास्तव में न केवल विधायकों व विधान सभा के अधिकारियों के लिए श्रेयस्कर व सहायक होगा अपितु इसके माध्यम से आम जनता को अपने राज्य की विधायी निकायों के प्रक्रियात्मक स्वरूप से साक्षात्कार करने का सुयोग्य अवसर भी प्राप्त होगा।

मैं हरियाणा विधानसभा के अध्यक्ष एवं समग्र अधिकारियों के इस सराहनीय सत्प्रयास की प्रशंसा करता हूँ तथा प्रकाश्यमान पत्रिका की सफलता हेतु मेरी अनंत शुभकामनाएं एवं सदाकांक्षाएं।

- एम.वेंकैया नायडु

प्रजा के सुख में ही राजा का सुख और प्रजाओं के हित में ही राजा को अपना हित समझना चाहिए।
आत्मप्रियता में राजा का हित नहीं है, प्रजाओं की प्रियता में ही राजा का हित है।
-चाणक्य

सत्यमेव जयते

अध्यक्ष, लोक सभा

"यह पत्रिका न केवल सदस्यों के लिए अपितु अनुभवी एवं वरिष्ठ सदस्यों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगी"

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि हरियाणा विधान सभा सचिवालय एक मासिक हिंदी पत्रिका 'सदन संदेश' का प्रकाशन प्रारंभ करने जा रहा है। इस पत्रिका का उद्देश्य संवैधानिक मूल्यों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना एवं जनप्रतिनिधियों को अपनी गतिविधियों से अवगत करवाना है। मैं विधान सभा के माननीय अध्यक्ष को इस सराहनीय पहल के लिए बधाई देता हूं।

'सदन संदेश' में हरियाणा विधान सभा के नियमों एवं परम्पराओं, महत्वपूर्ण विधायी कार्यक्रमों एवं गतिविधियों में बारे में प्रामाणिक एवं तथ्यपरक जानकरी उपलब्ध होगी तथा विधि निर्माताओं को हमारी विधायी संस्थाओं के कार्यकरण व कार्यों के बारे में अवगत कराया जाएगा।

विधायी निकायों, पद्धतियों और प्रक्रियाओं का स्वरूप हमेशा एक जैसा नहीं रहता। राजनीतिक एवं सामाजिक परिवर्तनों के साथ इनमें भी बदलाव होता रहता है। समय के साथ नए नियम बनते हैं तथा वर्तमान नियमों में परिर्वतन किए जाते हैं। ये सभी नियम सभा की पद्धतियों एवं प्रक्रियाओं का अभिन्न अंग हैं। अध्यक्ष द्वारा दिए गए विनिर्णय पूर्वोदाहरण बन जाते हैं और उत्तरोत्तर विधान सभाओं के लिए मार्गदर्शी सिद्धांत सिद्ध होते हैं।

इन सभी विवरणों का समावेश करते हुए यह पत्रिका न केवल नए सदस्यों के लिए बल्कि सभा के अनुभवी एवं वरिष्ठ सदस्यों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगी। इस पत्रिका से विधान सभा सदस्यों और सचिवालय के अधिकारियों को अपने विचारों व मतों की अभिव्यक्ति के लिए सार्थक मंच मिलेगा जिससे हमें अपनी लोकतांत्रिक प्रणाली का विकास करने और इसे सुदृढ़ बनाने में मदद मिलेगी।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका सदस्यों के लिए बहुत लाभप्रद होगी और इस पत्रिका के माध्यम से दी जाने वाली जानकारी पाठकों के लिए रुचिकर व संग्रहणीय होगी।

- ओम बिरला

सहिष्णुता और समझदारी संसदीय लोकतंत्र के लिए उतने ही आवश्यक हैं जितने संतुलन और मर्यादित चेतना।
– डॉ. शंकर दयाल शर्मा

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्री
भारत सरकार

> समाज को मिलेगी सकारात्मक दिशा

यह जानकर मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हरियाणा विधानसभा सचिवालय संवैधानिक मूल्यों के प्रति जागरूकता लाने और जनप्रतिनिधियों को अपनी गतिविधियों से अवगत करवाने के उद्देश्य से मासिक पत्रिका 'सदन संदेश' के पहले अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। इस पत्रिका में प्रकाशित होने वाले सार्वजनिक एवं सार्वभौमिक महत्व के विषयों एवं लेखों के माध्यम से न केवल माननीय सदस्यों एवं विधानसभा सचिवालय के अधिकारियों व कर्मचारियों को बल्कि सम्पूर्ण समाज को एक सकारात्मक दिशा मिलेगी।

मैं मासिक पत्रिका 'सदन संदेश के पहले अंक के प्रकाशन के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

- प्रकाश जावड़ेकर

धर्म का अर्थ तोड़ना नहीं, बल्कि जोड़ना है, धर्म एक संयोजक तत्व है जो लोगों को जोड़ता है।
- डॉ. शंकर दयाल शर्मा

मुख्य मंत्री
हरियाणा सरकार

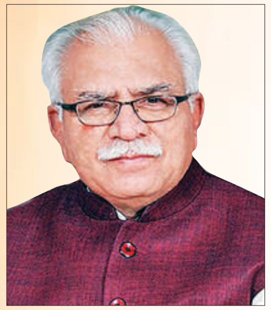

> इस पत्रिका के प्रकाशन से हरियाणा विधान सभा सचिवालय नई उपलब्धि हासिल करेगा

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि हरियाणा विधान सभा सचिवालय ने जनप्रतिनिधियों को विधान सभा की गतिविधियों तथा उनके दायित्वों एवं कर्तव्यों से अवगत करवाने और लोगों का संवैधानिक मूल्यों के प्रति जागरूक करने के लिए मासिक पत्रिका 'सदन संदेश' प्रकाशित करने का निर्णय लिया है।

एक नवम्बर,1966 को एक पृथक राज्य के रूप मे गठन के उपरान्त हरियाणा की अपनी विधान सभा बनी। इन 54 वर्षों में हरियाणा विधान सभा ने विधि निर्माण के अपने प्रमुख दायित्व का बखूबी निर्वहन करते हुए प्रदेशवासियों के बेहतर भविष्य का निर्माण किया है।

मुझे खुशी है कि माननीय अध्यक्ष श्री ज्ञान चंद गुप्ता जी के मार्गदर्शन में अब हरियाणा विधान सभा सचिवालय ने एक नई उपलब्धि हासिल करने की दिशा में कदम उठाते हुए मासिक पत्रिका 'सदन संदेश' प्रकाशित करने का निर्णय लिया जोकि अत्यंत सराहनीय है।

आशा है कि पत्रिका का प्रकाशन माननीय सदस्यों और हरियाणा विधान सभा सचिवालय के अधिकारियों व कर्मचारियों को विभिन्न समसामयिक विषयों के साथ-साथ विधान सभा से जुड़े विभिन्न महत्त्वपूर्ण विषयों पर अपने विचार अभिव्यक्त करने का सुअवसर प्रदान करेगा। साथ ही, पत्रिका में प्रकाशित होने वाली सारगर्भित एवं ज्ञानवर्धक पाठ्य सामग्री विधान सभा के वर्तमान तथा भावी सम्मानित सदस्यों के लिए बहुत लाभकारी सिद्ध होगी।

मैं 'सदन संदेश' पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

- मनोहर लाल

कष्ट और विपत्ति मनुष्य को शिक्षा देने वाले श्रेष्ठ गुण हैं। जो साहस के साथ उनका सामना करते हैं, वे विजयी होते हैं।
- लोकमान्य तिलक

उप मुख्यमंत्री
हरियाणा सरकार

“इस पत्रिका के माध्यम से संवैधानिक मूल्यों और सदन के नियमों की जानकारी मिलेगी”

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि हरियाणा विधान सभा सचिवालय, चण्डीगढ़ द्वारा पहली बार जन प्रतिनिधियों को सदन की प्रक्रियाओं व संवैधानिक मूल्यों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से जून, 2020 से विधानसभा की मासिक पत्रिका 'सदन संदेश' के प्रवेशांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

मैं सदन की मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ करने के निर्णय का स्वागत करता हूं और इसके लिए विधानसभा अध्यक्ष का विशेष आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने पत्रिका की शुरुआत करने की पहल की है।

मेरे लिए यह गर्व की बात है कि इस महान सदन ने जन प्रतिनिधि के रूप में मुझे व मेरे परिवार को प्रदेश की राजनीति में एक विशेष पहचान दी है। मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से सदन के सदस्य सदन के नियमों व परम्पराओं पर आधारित लेखों से उपयोगी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। यह पत्रिका लेखन कार्य में रुचि रखने वाले विधानसभा के अधिकारियों व कर्मचारियों को भी उनके काम के प्रति प्रेरित करेगी।

मुझे आशा है कि इस पत्रिका के माध्यम से संवैधानिक मूल्यों व सदन के नियमों एवं प्रक्रियाओं की जानकारी न केवल जन-प्रतिनिधियों तक पहुंचेगी बल्कि आमजन को भी जानकारी प्राप्त होगी।

मैं पत्रिका के प्रवेशांक के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

- दुष्यंत चौटाला

मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती, धर्म करने से पाप नहीं रहता, मौन रहने से कलह नहीं होता और जागते रहने से भय नहीं होता।

- चाणक्य

नेता प्रतिपक्ष
हरियाणा विधान सभा

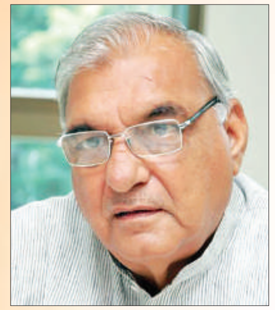

“विधानसभा के अधिकारियों व कर्मचारियों को विभिन्न विषयों पर लेखन के लिए प्रोत्साहित किया जाना उचित प्रयास है”

मुझे खुशी है कि हरियाणा विधान सभा सचिवालय द्वारा संवैधानिक मूल्यों के प्रति जागरूकता लाने व जनप्रतिनिधियों को विधान सभा की गतिविधियों से अवगत करवाने के उद्देश्य से मासिक पत्रिका 'सदन संदेश' का प्रकाशन आरम्भ किया जा रहा है।

यह एक बहुत अच्छा प्रयास है। मुझे विश्वास है कि माननीय सदस्यों द्वारा इस पत्रिका में सदन के नियमों व परंपराओं पर आधारित व हरियाणा केन्द्रित विषयों से संबंधित लेख प्रकाशित करवाए जायेंगे, जो कि उनके लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होंगे। इस पत्रिका में सदन की कार्यवाही से संबंधित विभिन्न विषयों पर लेख भी प्रकाशित किये जाने प्रस्तावित हैं। माननीय सदस्यों और विधान सभा सचिवालय के अधिकारियों व कर्मचारियों को विभिन्न विषयों पर लेखन के लिए प्रोत्साहित किया जाना भी उचित होगा। इस पत्रिका में माननीय सदस्यों को सदन की कार्यवाही से संबंधित व अन्य मुद्दों पर विस्तृत रूप से अपने विचार रखने का अवसर दिया जाना उचित होगा।

मैं इस मासिक पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

- भूपेन्द्र सिंह हुड्डा

मैं इस बात से सहमत नहीं हूं कि धर्म का राजनीति से कोई संबंध नहीं है। धर्म से विलग राजनीति मृतक शरीर के तुल्य है, जो केवल जला देने योग्य है।

-महात्मा गांधी

संसदीय कार्य मंत्री
हरियाणा सरकार

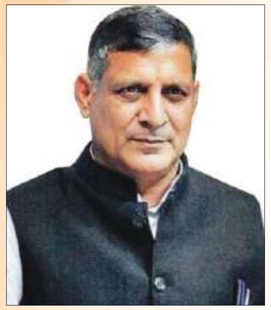

“इस पत्रिका के माध्यम से संवैधानिक मूल्यों और सदन के नियमों की जानकारी मिलेगी”

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि हरियाणा विधान सभा सचिवालय, चण्डीगढ़ द्वारा पहली बार जन प्रतिनिधियों को सदन की प्रक्रियाओं व संवैधानिक मूल्यों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से विधान सभा की मासिक पत्रिका ‘सदन संदेश’ के प्रवेशांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

मैं सदन की मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ करने के निर्णय का स्वागत करता हूं और इसके लिए विधान सभा अध्यक्ष का विशेष आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने पत्रिका की शुरुआत करने की पहल की है।

मेरे लिए यह गर्व की बात है कि मुझे इस महान सदन के संचालन में अध्यक्ष के रूप में सेवा करने का अवसर प्राप्त रहा है। मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से सदन के सदस्य सदन के नियमों व परम्पराओं पर आधारित लेखों से उपयोगी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

मुझे आशा है कि इस पत्रिका के माध्यम से संवैधानिक मूल्यों व सदन के नियमों एवं प्रक्रियाओं की जानकारी न केवल जन प्रतिनिधियों तक पहुंचेगी बल्कि आमजन को भी जानकारी प्राप्त होगी।

मैं पत्रिका के प्रवेशांक के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

- कंवर पाल

मनुष्य जन्म से ही न तो मस्तक पर तिलक लगाकर आता है, न यज्ञोपवीत धारण करके।
जो सद्कार्य करें, वह द्विज है और जो कुकर्म करता है, वह नीच है।
-गौत्तम बुद्ध

गीता की धरती पर बसती लोकतंत्र की आत्मा

दिनेश कुमार
मीडिया एवं संचार अधिकारी
हरियाणा विधान सभा

संवाद लोकतंत्र की आत्मा है। इसके साथ ही यह तत्व तक पहुंचने का उपक्रम भी है। सृष्टि के प्रारंभ से ही मानव ने अपने और चराचर जगत के कल्याण के मार्ग तलाशने शुरू कर दिए थे। विकास का यह क्रम कब शुरू हुआ इसकी निश्चित कालगणना निसंदेह जटिल है, लेकिन यह सत्य स्थायी है कि मनुष्य समय की आवश्यकतानुसार आविष्कार करने में सदैव रत रहा है।

सामाजिक और लोक जीवन का विकास भी मनुष्य की इसी गाथा की श्रृंखला है। समाजों के विकास के साथ राज्य और शासन व्यवस्थाओं का प्रादुर्भाव हुआ। इतिहास की सुदीर्घ यात्रा, व्यावहारिक अनुभवों और कड़े प्रयासों के बाद विश्व के अनेक हिस्सों में लोकतंत्रीय प्रणाली विकासित हुई। अनेक प्रकार के गौरव से अलंकृत भारत आज धरा का सबसे वृहद लोकतंत्र है।

इस गौरवशाली लोकतांत्रिक देश में हरियाणा वह स्थान है, जहां विश्व का सबसे सटीक संवाद हुआ। धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में आज से करीब 5100 वर्ष पूर्व हुआ यह संवाद इतना प्रभावी था कि कर्त्तव्य से विमुख हो रहे अर्जुन को सहज भाव से कर्मपथ पर ला दिया। इसके साथ ही इस धरा को यह गौरव भी प्राप्त हो गया कि प्रत्यक्ष ईश ने यहां पहुंचकर अपनी बात रखी।

इतिहासविदों की मानें तो इससे पूर्व भी हरियाणा की धरती पर संवाद की लंबी परंपरा रही। सरस्वती नदी आज बेशक भूमिगत हो गई हो, लेकिन उसके तटों पर लिखी गई ऋचाएं हमेशा के लिए कालजयी हो गईं। वेद के बाद उपनिषद और तत्पश्चात अनेक पौराणिक आख्यान इस मिट्टी पर निरंतर हो रहे संवाद के जीवंत प्रमाण हैं।

वैदिक साहित्य के आधार पर संवाद में मातृशक्ति के योगदान की बात करें तो बड़ा ही रोचक तथ्य सामने आता है। वह यह कि वेदों के 60 फीसदी मंत्र ऐसे हैं जिनमें महिला ऋषियों की सहभागिता रही है। अर्थात या तो उनकी दृष्टा या प्रश्न पूछने वाली महिला ऋषि है। कुल मिलाकर शौर्य और कर्मवीरों की इस धरती को संवाद की जननी भी कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। सांस्कृतिक मूल्यों की हजारों वर्षों की परंपरा वाला हरियाणा 1 नवंबर 1966 को राजनीतिक रूप से अस्तित्व में आया। इससे पहले इस क्षेत्र की सांस्कृतिक और साहित्यिक पहचान तो विपुल थी, लेकिन प्रशासनिक दृष्टि से यह वृहद पंजाब का ही हिस्सा था। भारत सरकार के राज्य पुनर्गठन अधीनियम के तहत हरियाणा को अलग राज्य बनाया गया। चंडीगढ़ को दोनों राज्यों की सांझी राजधानी घोषित किया गया। भारत की यह इकलौती व्यवस्था है, जहां दो राज्यों की एक राजधानी है। देश के इस सुंदरतम शहर में ही हरियाणा की विधानसभा स्थित है, जहां ढाई करोड़ लोगों के शुभचिंतक जनप्रतिनिधि उनके हितों को वाणी देते हैं।

संवाद और ज्ञान का अजस्त्र स्त्रोत रही इस धरती ने संवाद कला के मानक भी तय किए। हरियाणा विधानसभा का सदन सदैव इस सत्य का स्मरण करवाता रहता है। यहां स्पष्ट रूप से अंकित है – ‘सभा में या तो प्रवेश न किया जाए, यदि प्रवेश किया जाए तो वहां स्पष्ट और सच बात कही जाए क्योंकि वहां न बोलने से या गलत बोलने से दोनों की ही स्थितियों में मनुष्य पाप का भागी बन जाता है।’ संवाद का इससे बड़ा मानक क्या हो सकता है? संवाद के ऐसे ही उच्च आदर्शों के कारण इस सदन को सत्य का मंदिर कहा जाता है।

हरियाणा विधानसभा के इस प्रकार के उच्च आदर्शों और जनता के प्रतिनिधि विधायकों की कर्मठता को रेखांकित करने के लिए इस मासिक पत्रिका ‘सदन संदेश’ का प्रकाशन शुरू किया गया है। हमारे विधायक जिस प्रकार जनसेवा के लिए प्रतिक्षण सक्रिय रहते हुए अपनी कर्तव्यपूर्ति में संलग्न रहते हैं, उसे अभिव्यक्ति देना अनिवार्य लगता है। लोककल्याण की भावना से सदन में होने वाले विमर्श-मंथन को शब्द देना विधानसभा सचिवालय अपना कर्तव्य समझता है। सदन के नियम और परंपराओं का समय-समय पर स्मरण करवाना भी सभी पक्षों के लिए हितकर रहेगा। इसलिए इस प्रकार के विषय इस पत्रिका का हिस्सा रहेंगे।

शेष पेज 28 पर...

स्वर्णिम अध्याय लिखता हरियाणा का सदन

संवैधानिक नियमों के साथ विकसित हो रही गौरवशाली परंपराएं

दिनेश कुमार

> विधानसभा अध्यक्ष का मुख्य दायित्व सदन की कार्यवाही को प्रभावी और अधिकाधिक लोकहितकारी बनाना है। सदन में ऐसा वातावरण निर्मित करना जहां सत्ता पक्ष और विपक्ष सार्थक संवाद कर सकें। जनता की आकांक्षाओं को ठीक से समझा जा सके और तंत्र को जनापेक्षाओं के अनुसार विकसित किया जा सके। इस मंथन से ऐसा नवनीत निकले जिससे कि जनता-जनार्दन का भोग लगाया जा सके।

सदन लोकतंत्र का मंदिर है। इसे सत्य का शिवालय भी कहा जाता है। यहां जनता रूपी जनार्दन यहां अपने प्रतिनिधि भेजता है, ताकि उसके हितों की पैरवी ठीक से की जा सके। सदन की परंपरा उतनी ही लंबी है, जितना कि लोकतंत्र का इतिहास। कारण यही है कि अपने देश ने लोकतंत्र का संसदीय स्वरूप अंगिकृत किया है। देश के अन्य राज्यों की तरह हरियाणा विधानसभा तकरीबन उन्हीं नियमों का पालन करती है, जो देश की संसद करती है। इन नियमों और शक्तियों का मूल स्रोत संविधान ही है।

इन नियमों का क्रियान्वयन विधिसम्मत हो, यह पूरी जिम्मेदारी विधानसभा अध्यक्ष की रहती है। यही कारण है कि संविधान ने सदन अध्यक्ष के प्रति व्यापक उदारता दिखाई है। उन्हें अनेक ऐसी शक्तियों से सुशोभित किया है, जिनका वे अपने विवेक से प्रयोग करते हैं। संविधान की मूल भावना का सम्मान करते हुए उसमें निहित उद्देश्यों की पूर्ति करना उनकी महती जिम्मेदारी रहती है। इसलिए यह कार्य अत्यंत जटिल रहता है।

1 नवंबर 1966 को हरियाणा राज्य की स्थापना हुई तथा इसके 35 दिन बाद अर्थात् 6 दिसंबर को पहली विधानसभा का पहला सत्र शुरू हुआ। तब से लेकर आज तक इस विधानसभा ने अनेक गौरवशाली परंपराएं स्थापित की हैं। कोई भी दल सत्तासीन हो, लेकिन सदन के केंद्र में केवल और केवल लोकहित रहता है। विधानसभा अध्यक्ष को इसी महती जिम्मेदारी का निर्वहन करना होता है। विधानसभा अध्यक्ष को सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच सुदृढ़ सेतु का काम करना होता है। एक राजनीतिक व्यक्तित्व होने के बावजूद दलीय राजनीति से पूरी तरह से निरपेक्ष रहना होता है।

उनका मुख्य दायित्व सदन की कार्यवाही को प्रभावी और अधिकाधिक लोकहितकारी बनाना है। सदन में ऐसा वातावरण निर्मित करना जहां सत्ता पक्ष और विपक्ष सार्थक संवाद कर सकें। जनता की आकांक्षाओं को ठीक से समझा जा सके और तंत्र को जनापेक्षाओं के अनुसार विकसित किया जा सके। प्रदेश की समस्याओं को चिह्नित कर सके तथा उनके समाधान निकाल सके ताकि विकास की इबारत सुनहरे अक्षरों में लिखी जा सके। इस मंथन से ऐसा नवनीत निकले जिससे कि जनता-जनार्दन का भोग लगाया जा सके।

इसके साथ ही उन पर विधानसभा सचिवालय के संचालन की जिम्मेदारी भी होती है। इन सारी जिम्मेदारियों के निर्वहन में विधानसभा अध्यक्ष को कुछ कड़े फैसले भी लेने होते हैं। वर्तमान में हरियाणा की 14वीं विधानसभा काम कर रही है, जिसका गठन 4 नवंबर 2019 को हुआ। राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानने वाले कुशल अनुभवी राजनेता श्री ज्ञान चंद गुप्ता जी इस बार विधान सभा अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे हैं। मात्र नौ माह की अवधि में उन्होंने साबित कर दिया है कि अगर व्यक्ति अपने कर्तव्य के प्रति पूर्णत: निष्ठावान हो तो कठिन से कठिन कार्य भी न सिर्फ आसान बन जाता है, अपितु वह अधिकाधिक जन-कल्याणकारी भी बन जाता है। हरियाणा विधानसभा की इस लघु कालावधि की कार्यशैली पर दृष्टि डालें तो स्पष्ट हो जाता है कि इस दौरान अनेक ऐसे मानक स्थापित हुए हैं, जिन्हें भविष्य में सदैव याद रखा जाएगा।

डिजीटलाइजेशन की तरफ बढ़ते कदम

वर्ष 2020 का बजट सत्र अनेक उपलब्धियों के अलावा इसलिए भी विशिष्ट रहा, क्योंकि इस सत्र से विधानसभा सचिवालय ने डिजीटलाइजेशन की तरफ कदम बढ़ा दिए। ऐसा पहली बार हुआ जब माननीय सदस्यों को डिजीटली प्रारूप में टैब से बजट उपलब्ध करवाया गया। इसके लिए वित्त विभाग ने डिजीटली बजट तैयार किया और इंटरनेट के माध्यम से उसे वेबसाइट पर डाल दिया गया। विधायकों को पढ़ने के लिए टैब उपलब्ध करवाए गए। अनेक विभागों की रिपोर्ट भी सीडी में पेश की गई। मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी और विधानसभा अध्यक्ष श्री ज्ञान चंद गुप्ता जी शुरू से ही पेपरलेस कार्य प्रणाली के पक्षधर हैं। उनका मानना है कि डिजीटलाइजेशन से न सिर्फ कार्य की गति तेज होती है, बल्कि उसमें पारदर्शिता भी आती है। इसके साथ ही यह पर्यावरण संरक्षण के लिए भी लाभकारी है। जनता के धन की बचत तो होती ही है। विधानसभा की ओर से सभी विधायकों को लैपटॉप देने के पीछे भी यही कारण है।

शानदार बजट सत्र

हरियाणा की 14वीं विधान सभा का पहला बजट सत्र 20 फरवरी 2020 को शुरू हुआ, 4 मार्च तक चला। इस दौरान कुल 10 बैठकें हुईं। यह हरियाणा के इतिहास में शानदार बजट सत्रों में गिना जाता है। इस दौरान सभी विधायकों को अपनी बात रखने का पूरा समय मिला। इस बजट की गणना लंबे बजट सत्रों में की जाती है। छोटे बजट सत्र में आमतौर पर सरकार की ओर से बजट पेश कर उसे पास करवा लिया जाता है, लेकिन इस बार बजट सत्र लंबा होने के कारण विपक्ष के साथ साथ सत्ता पक्ष के विधायकों ने भी जमकर सवाल किए और सरकारी पक्ष की जवाबदेही सुनिश्चित की।

पारदर्शी प्रश्नकाल, ड्रा से बारी

आदर्श मुखिया की पहला गुण उसका पक्षपात रहित व्यवहार रहता है। मुखिया का जितना निष्पक्ष होना आवश्यक है, उतना ही जरूरी है निष्पक्ष दिखना। विधानसभा सत्र में प्रश्न पूछने वाले विधायकों की अक्सर यह शिकायत रहती थी कि उनके प्रश्नों की बारी नहीं आती। वर्तमान विस अध्यक्ष ज्ञान चंद गुप्ता ने इस शिकायत का निवारण करने के लिए लाटरी प्रणाली को लागू किया। प्रतिदिन पूछे जाने वाले प्रश्नों के लिए संबंधित विधायक का नाम ड्रा से निकाला जाने लगा। समय विभाजन भी इस प्रकार किया है कि हर विधायक को अपनी बात रखने का समान अवसर मिल सके। इससे भेदभाव की संभावना पूर्णत: समाप्त हो गई। इससे सभी दलों के विधायक संतुष्ट हैं।

बदली सी नजर आई दर्शक दीर्घा

विधानसभा सत्र के दौरान दर्शक दीर्घा का दृश्य इस बार पूरी तरह से बदला हुआ नजर आया। यहां कुर्सियां फुल होती थीं और बड़ी संख्या में लोग गैलरी के फर्नीचर के सहारे खड़े नजर आते थे। कारण यह था कि दर्शक दीर्घा में सीटें 110 हैं, और पास जारी होते थे 250 से अधिक। इसके चलते कई बार धक्का-मुक्की के दृश्य भी सामने आ जाते थे। अध्यक्ष ने समस्या को समझने की कोशिश की तो पता चला कि अनुमति पत्र 'विजीटर पास' जारी करते वक्त ही गड़बड़ हो रही है। निदान के लिए लघु अवधि वाले अनुमति पत्र जारी किए जाने लगे, तथा उनका कड़ाई से पालन होने लगा। अब समस्या यह थी कि निश्चित समयावधि के बाद विशेष लोगों (वीवीआईपी) से सीट खाली कैसे करवाई जाए। इसके लिए सुरक्षा विभाग के कर्मचारियों की व्यवहार कुशलता प्रयोग में लाई गई। अब व्यवस्था ऐसी बनी है कि पहले से ज्यादा दर्शक सत्र देखने आते हैं, लेकिन बिना किसी परेशानी के।

व्यवस्थित पार्किंग

विधानसभा सत्रों के दौरान वाहन पार्किंग की अव्यवस्था अक्सर देखने में आती थी। कई बार तो ऐसा भी होता था कि मंत्री और विधायकों के वाहनों के लिए भी जगह मिलनी मुश्किल हो जाती थी। विधानसभा अध्यक्ष ज्ञान चंद गुप्ता इस बार बजट सत्र शुरू होने से पहले इस व्यवस्था को लेकर सचेत थे। उन्होंने विधानसभा के सुरक्षा विभाग के साथ बैठक की और इसकी बारिकियों को समझा। तय हुआ कि पार्किंग व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए विधानसभा परिसर के साथ लगते खाली पड़ी जगहों को भी इसके लिए सदुपयोग किया जा सकता है। आवश्यक वाहनों के लिए स्टिकर जारी किए गए और निर्धारित नियमों का कड़ाई से पालन किया गया। विधानसभा के सुरक्षा विभाग ने चंडीगढ़ पुलिस का भी सहयोग लिया है। परिणाम यह रहा कि पूरे बजट सत्र के दौरान पार्किंग व्यवस्था दुरुस्त रही।

विशिष्ट भोज की विशिष्टता

मुख्यमंत्री और विधानसभा अध्यक्ष की ओर से दिए नव निर्वाचित माननीय सदस्यों का परस्पर परिचय और मित्रवत् वातावरण निर्माण के लिए समय-समय पर विशिष्ट भोज का आयोजन किया जाता है। आमतौर पर इस प्रकार के आयोजनों पर निर्धारित नामों से भिन्न लोगों के पहुंचने की शिकायतें रहती हैं। कई बार तो अनुमान से कहीं अधिक लोग पहुंच जाते हैं। परेशानी अधिक लोगों को भोजन करवाने में नहीं होती, अपितु व्यवस्था और अनुशासन संबंधी दूसरी दिक्कतें आती हैं। अब इस व्यवस्था में पर्याप्त सुधार किया गया है। समुचित सूचियां बनाई जाती हैं और अनुशासन का पूरा ध्यान रखा जाता है। ■

लॉकडाउन में अभिभावक की भूमिका में नजर आए माननीय अध्यक्ष

◆ दिनेश कुमार

कोरोना कालखंड में हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष ज्ञान चंद गुप्ता माननीय सदस्यों के लिए अभिभावक के रूप में नजर आए। पूर्णबंदी के दौरान जब पूरा देश सामाजिक दूरी के नियमों में बंधा था तो विधानसभा अध्यक्ष विधायकों के साथ आत्मीयता की डोर मजबूत करते दिखाई दिये। कभी व्यक्तिगत फोन करके तो कभी वीडियो कॉन्फ्रेंस करके उनका हाल-चाल सतत रूप से जानते रहे। इस दौरान उन्होंने विधायकों की व्यक्तिगत कुशलक्षेम पूछी, साथ ही विधायी कार्यों के लिए उन्हें प्रेरित भी करते रहे। 21 और 22 मई को वे 4 सत्रों में वीडियो कॉन्फ्रेंस कर विधायकों से रूबरू हुए।

पहले दिन 11 जिलों के विधायकों से बातचीत की। इस दौरान विधानसभा कमेटियों के गठन और उनकी कार्यशैली को प्रभावशाली बनाने के लिए विधायकों से सुझाव मांगे गए। विधायकों ने कमेटियों के गठन पर सुझाव देते हुए अपने क्षेत्र की समस्याएं भी उठाईं। वीडियो कॉन्फ्रेंस के दौरान विधायकों ने विधानसभा अध्यक्ष ज्ञानचंद गुप्ता के सम्मुख अधिकारियों द्वारा उनके फोन नहीं उठाने का मसला उठाया।

> लोकतांत्रिक व्यवस्था में अफसर जनसेवक और विधायक जनप्रतिनिधि हैं। अफसरों को काम बताना जनता के चुने हुए प्रतिनिधि का दायित्व है। उनके इस दायित्व निर्वहन के लिए ही अधिकारियों को नियुक्त किया गया है। विधायकों की बात सुनना अफसरों के लिए जरूरी है।
>
> **– ज्ञान चंद गुप्ता**
> माननीय अध्यक्ष,
> हरियाणा विधान सभा

विधायकों ने कहा कि अधिकारी लॉकडाउन का बहाना बना कर अक्सर उनका फोन नहीं उठाते। अगर फोन उठा भी लेते हैं तो बताए हुए काम नहीं करते। इस पर विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि अफसरों द्वारा विधायकों के फोन नहीं उठाना गंभीर मामला है। अधिकारियों को यह बात अच्छे से समझनी चाहिए कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में अफसर जनसेवक और विधायक जनप्रतिनिधि हैं। अफसरों को काम बताना जनता के चुने हुए प्रतिनिधि का दायित्व है। उनके इस दायित्व निवर्हन के लिए ही अधिकारियों को नियुक्त किया गया है। अगर कोई अधिकारी जनप्रतिनिधियों के बताए कार्यों में कोताही बरतता है तो इस पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

वीडियों कॉन्फ्रेस के दौरान कांग्रेस विधायक किरण चौधरी ने कहा कि कमेटियों की कार्यशैली को प्रभावी बनाने के लिए पुराने और तत्काल महत्व के विषयों का वर्गीकरण कर उन पर काम करना चाहिए। कमेटियों का शिक्षण भी आवश्यक है।

भाजपा विधायक घनश्याम सर्राफ ने कहा कि यह सुनिश्चित करना चाहिए कि समितियों की सिफारियों को अधिकारी गंभीरता से लें और निश्चित समयावधि में उन्हें पूरा करने के लिए संकल्पबद्ध हों। उन्होंने जल शक्ति पर भी संसदीय समिति के गठन का सुझाव दिया।

फतेहाबाद में विधायक दुड़ाराम ने कहा कि अगर कोरोना संकट के कारण चंडीगढ़ में समिति की बैठकें करना संभव नहीं हो पा रही हो तो प्रदेश के किसी अन्य स्थान पर बैठकें शुरू कर लेनी चाहिए। उन्होंने हरियाणा हाईकोर्ट में कानून अफसरों की नियक्ति में पिछड़े वर्गों को आरक्षण देने की मांग भी उठाई।

गुरुग्राम से विधायक संजय सिंह ने भी अधिकारियों द्वारा फोन नहीं सुनने का विषय उठाया। बिशंभर सिंह ने कहा कि संसदीय कमेटियों में जिला स्तरीय अधिकारियों को भी बुलाया जाना चाहिए। ऐसा करने से वे इन कमेटियों की गंभीरता को समझेंगे और अपने कार्य के प्रति और अधिक जवाबदेह होंगे।

नीरज शर्मा ने कहा कि कमेटियां मात्र सैर सपाटा बन कर न रह जाए। उन्होंने कहा कि लॉकडाउन के दौरान सभी ने श्रमिकों का महत्व समझा है। इस वर्ग की समस्याएं भी बढ़ी हैं। इसलिए इस विषय पर भी कमेटी का गठन किया जाना चाहिए। इसके साथ ही उन्होंने सुझाव दिया कि लॉकडाउन के दौरान सामाजिक दूरी बनाते हुए विधानसभा का

सुधारात्मक प्रयासों से विधायक गदगद, बोले- मावलंकर की यादें ताजा होने लगीं

रोहतक से विधायक भारत भूषण बत्रा ने संसदीय समितियों को प्रभावशाली बनाने और जनप्रतिनिधियों की गरिमा बनाए रखने के लिए कड़े कदम उठाने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि जो अधिकारी विधायकों को उचित सम्मान नहीं देते उनके खिलाफ कार्रवाई के लिए लोकसभा की तर्ज पर विधानसभा की ओर से भी सरकारी अधिकारियों के अवमानननापूर्वक व्यवहार एवं प्रोटोकॉल उल्लंघन संबंधी कमेटी का भी गठन किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि विशेषाधिकार समिति की रिपोर्ट भी सदन के पटल पर रखनी चाहिए। बत्रा ने कहा कि बतौर विधानसभा अध्यक्ष ज्ञानचंद गुप्ता जिस प्रकार के सुधारात्मक प्रयास कर रहे हैं, उन्हें देखकर लोकसभा के प्रथम अध्यक्ष जी.वी. मावलंकर की यादें ताजा होने लगी हैं।

सद्प्रयास

अफसरों द्वारा विधायकों की बात न सुनने पर 24 मई को मुख्यमंत्री के साथ बैठक

मुख्यमंत्री की ओर से सभी मंडल आयुक्तों, जिला उपायुक्तों, पुलिस अधीक्षकों, नगर निकायों के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों को पत्र लिखा गया

कमेटी सभापतियों के साथ 2 जून 2020 को बैठक

कोरोना काल में लोकसभा अध्यक्ष के साथ, वीडियो कॉन्फ्रेंस, नियंत्रण कक्ष की स्थापना, हरियाणा विधानसभा ने 120 कॉल एवं संदेश प्राप्त कर लोगों की सहायता की।

हरियाणा विधानसभा के चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के साथ लोहड़ी पर्व का आयोजन।

सत्र बुलाया जा सकता है। इसके लिए एक तिहाई विधायकों का सदन में तथा शेष को एमएलए हॉस्टल से तकनीकी माध्यमों से जोड़ा जा सकता है।

मुलाना विधायक वरुण चौधरी ने कहा कि कमेटियों के काम को प्रभावी बनाने के लिए हर कमेटी की कम से कम एक बैठक विधानसभा अध्यक्ष ने लेनी चाहिए। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि विधानसभा परिसर में हरियाणा को उसका उचित भाग नहीं मिल पाया है। उन्होंने कहा कि हरियाणा के लिए 40 फीसदी परिसर हासिल करने के लिए प्रयास तेज किए जाने चाहिए।

नारनौंद से जजपा विधायक रामकुमार गौत्तम ने अनाज मंडियों में गेहूं खरीद का मसला उठाया। इसके साथ ही उन्होंने विधानसभा कमेटियों को और असरदार बनाने की बात कही। झज्जर से कांग्रेस विधायक गीता भुक्कल ने कहा कि कोरोना संकट से निटपने के लिए भी विधानसभा समिति का गठन किया जाना चाहिए। हांसी से विनोद भ्याणा ने कहा कि समिति की बैठक वीडियो कॉन्फ्रेंस से न करवा कर प्रत्यक्ष करवानी चाहिए।

बहादुरगढ़ से विधायक राजेंद्र सिंह जून ने कहा कि कमेटियों की बैठकों का समय 12 बजे का होना चाहिए ताकि विधायक सामाजिक दूरी का पालन करते हुए उसी दिन अपने गृह स्थान को लौट सकें। जींद के विधायक डॉ. कृष्ण मिड्ढा ने कहा कि समितियों की बैठकों में अधिकारियों की उपस्थिति सुनिश्चित करनी चाहिए।

सफीदों से विधायक सुभाष गंगोली ने कोरोना प्रभावित क्षेत्रों में कंटेनमेंट जॉन की अवधि घटाने की मांग की। गुहला से ईश्वर सिंह ने कहा कि सीवन और गुहला ब्लॉक को डार्क जॉन से बाहर किया जाए। डॉर्क जॉन श्रेणी में आने के कारण यहां के किसान धान की फसल नहीं कर पाएंगे जबकि इस क्षेत्र का यह मुख्य व्यवसाय है। ऐसा होने से यहां बड़ी संख्या में स्थित चावल मिलों पर संकट का साया मंडराने लगा है।

पुंडरी से विधायक रणधीर गोलन ने कोरोना संकट से निटपने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रशंसा की। जुलाना से अमरजीत सिंह ने कोरोना संकट के बावजूद गेहूं खरीद और उठान पर प्रदेश सरकार की सराहना की।

वीडियो कॉन्फ्रेंस के दौरान अंबाला से विधायक असीम गोयल, कैथल से लीला राम, नयनपाल रावत, सत्यप्रकाश जरावता, शैली चौधरी, राजेश नागर, नरेंद्र गुप्ता और नीरज शर्मा ने भी कमेटियों की कार्यशैली को प्रभावशाली बनाने के लिए सुझाव दिए।

22 मई को नांगल चौधरी के विधायक डॉ. अभय सिंह यादव ने विधानसभा समितियों के गठन एवं कार्यशैली का प्रभावी बनाने का सुझाव देते हुए कहा कि जिन कमेटियों पर ज्यादा कार्यभार होता है, उनकी बैठकें प्रतिदिन तथा जिनके पास कम काम होता उनकी बैठकें साप्ताहिक या दो सप्ताह में एक बार बुलानी चाहिए। अटेली के विधायक सीताराम यादव ने कहा कि कमेटी बैठकों में अधिकारियों की उपस्थिति हर हाल में सुनिश्चित करनी चाहिए। महेंद्रगढ़ के विधायक राव दान सिंह ने कहा कि जब तक कमेटी की बैठकों में लिए निणयों का क्रियान्वयन न हो सके, तब तक लगातार बैठकें बुलाकर उन मसलों का समाधान करवाना चाहिए।

फिरोजपुरा झिरका से विधायक चौधरी मामन खान ने कहा कि मेवात में निजी चालकों की संख्या काफी ज्यादा है, इससे यहां कोरोना संक्रमण का खतरा भी ज्यादा है। उन्होंने राशन डिपो होल्डरों द्वारा गरीबों के राशन से धांधली करने का मुद्दा भी उठाया। शाहबाद से विधायक रामकरण काला ने प्रशासनिक अधिकारियों की प्रशंसा की।

थानेसर के विधायक सुभाष सुधा ने कहा विधायकों से उनकी रुचि पूछकर कमेटियों में शामिल करने का प्रयास अत्यंत सराहनीय है। पुन्हाना के विधायक मोहम्मद इलियास ने विस अध्यक्ष एवं वीडियो कॉन्फ्रेंस में शामिल विधायकों को ईद की बधाई देते हुए कहा कि कमेटी की प्रत्येक बैठक की शुरुआत में पिछली बैठक में की गई सिफारिशों के क्रियान्वयन पर रिपोर्ट प्रस्तुत की जानी चाहिए।

पलवल से विधायक दीपक मंगला ने कहा कि प्रत्येक कमेटी में अनुभवी विधायकों को अवश्य रखना चाहिए। कालका से विधायक प्रदीप चौधरी ने हरियाणा के उन कारोबारियों की समस्या उठाई जिनके प्रतिष्ठान सीमावर्ती हिमाचल में स्थित है।

इंद्री से रामकुमार कश्यप ने कोरोना काल के दौरान राधा स्वामी सत्संग की तरफ से किए गए सेवा कार्यों की अत्यंत सराहना की। उन्होंने कहा कि इस दौरान बेरोजगारी भी बढ़ी है, इसके लिए सरकार को उचित योजना बनानी चाहिए। इसराना से विधायक बलबीर सिंह ने कहा कि समाजसेवी संगठनों ने कोरोना संक्रमण से बचने के लिए प्रभावी जागरुकता अभियान जारी रखा।

समालखा से धर्मपाल छोक्कर ने कहा समितियों के गठन से पूर्व विधानसभा अध्यक्ष द्वारा उनकी रुचि जानना सराहनीय प्रयास है। इससे ये समितियां ज्यादा प्रभावी ढंग से काम कर सकेंगी। नूह से अफताब अहमद ने कहा कि श्रमिकों का पैदल जाना काफी पीड़ादायक रहा। उन्होंने किसानों को फसलों की अदायगी का मसला भी उठाया। हथीन से प्रवीण डागर ने कहा कि विधानसभा समितियों के निर्णयों पर अनिश्चितकालीन देरी गलत है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि उनके हलके के 3 विद्यालयों के अपग्रेडेशन पर एक बैठक में विचार हो चुका है, लेकिन आज तक भी उस फैसले के क्रियान्वयन की जानकारी नहीं दी गई। रेवाड़ी से चिरंजीव सिंह ने कहा कि स्कूल प्रबंधकों द्वारा अभिभावकों पर फीस वसूली के लिए दबाव डाला जा रहा है।

कोसली से लक्ष्मण सिंह यादव ने कहा अपने घरों को लौट रहे प्रवासी श्रमिकों के लिए स्थानीय पंच और सरपंचों ने बड़े स्तर पर भोजन की व्यवस्था की। डबवाली से अमित सिहाग ने कहा कि समितियों के गठन से पूर्व विधायकों की रुचि और इच्छा पूछकर विधानसभा अध्यक्ष ने उनका मान बढ़ाया है। गोहाना से जगबीर मलिक ने बतौर वरिष्ठ विधायक अफसरशाही द्वारा उनकी अनदेखी पर पीड़ा व्यक्त की। राई से मोहन लाल बड़ौली ने भी कोरोना काल के अनुभव विधानसभा अध्यक्ष के साथ साझा किए। गन्नौर से निर्मल रानी ने विधानसभा अध्यक्ष के इस प्रयास की सराहना की।

यमुनानगर से घनश्याम दास अरोड़ा ने अपने हलके में समाजसेवी संस्थाओं द्वारा किए गए सेवा कार्यों की विस्तार से जानकारी दी। रादौर से विधायक बिशन लाल सैनी ने कहा कि विपक्षी विधायक होने के बावजूद सत्तापक्ष और विधानसभा अध्यक्ष की ओर से इतना महत्व पहले कभी नहीं दिया गया। उन्होंने कहा कि वे तीन बार विधायक बने हैं, लेकिन दुर्भाग्यवश हमेशा विपक्ष में ही रहे। सैनी ने कहा कि इस बार विपक्ष में होने के बावजूद पर्याप्त सम्मान मिल रहा है। ■

विधायक ने दिया एक साल का वेतन और 5 लाख रुपये

वीडियो कॉन्फ्रेंस के दौरान पानीपत शहरी से विधायक प्रमोद कुमार विज ने हरियाणा कोरोना राहत कोष के लिए अपना एक वर्ष का वेतन देने की जानकारी दी। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि वे अपने निजी कोष से 5 लाख रुपये भी दे चुके हैं। इसके साथ ही वे जन सहयोग से हलके में 700 क्विंटल अनाज और 11 लाख कपड़ों का भी वितरण करवा चुके हैं। गौरतलब है कि हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष ने कोरोना संक्रमण शुरू होते ही विधायकों और पूर्व विधायकों के साथ-साथ विधानसभा के कर्मचारियों व अधिकारियों से अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग देने का आह्वान किया था। विधानसभा अध्यक्ष ने अपने स्वेच्छिक अनुदान से 3 करोड़ रुपये इस कोष के लिए दिए है।

बचाव कार्य करते हुए वीसी में शामिल हुए कल्याण

हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष ज्ञानचंद गुप्ता की ओर से आयोजित पहली वीडियो कॉन्फ्रेंस को विधायकों ने कितनी गंभीरता से लिया इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता कि एक विधायक राहत और बचाव कार्यों के दौरान ही इसमें शामिल हुए। बात घरौंडा से विधायक हरविंद्र कल्याण की है। वे अपने हलके के गांव रावर में नहर टूटने से हुए जलभराव के कारण वहां राहत एवं बचाव कार्यों में डटे हुए थे। इसी दौरान विधानसभा अध्यक्ष की वीडियो कॉन्फ्रेंस का समय हो गया। विधायक हरविंद्र कल्याण रावर गांव से ही अपने मोबाइल फोन के माध्यम से इस कॉन्फ्रेंस में शामिल हुए। उन्होंने प्रवासी मजूदरों के प्रस्थान को संवेदनशील मामला बताते हुए कहा कि वे अतिथि मानकर मजदूरों को रोकने का प्रयास कर रहे हैं।

उच्च संसदीय मर्यादाओं को बनाएं जीवन का हिस्सा

संसदीय लोकतंत्र की सफलता, सुव्यवस्थित चर्चा में निहित होती है, तदानुसार इसके लिए नियमों, परम्पराओं, प्रक्रियात्मक साधनों आदि की एक विस्तृत व्यवस्था विकसित हुई है। सदन में शिष्टाचार व अनुशासन स्थापित हो तथा माननीय सदस्यों को संसदीय प्रणाली व नियमों की गहन जानकारी प्राप्त हो, इस उद्देश्य से 21 और 22 जनवरी को अभूतपूर्व एवं अनोखे प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुझे पूरा यकीन है कि हम सभी उच्च संसदीय मर्यादाओं एवं परम्पराओं को अपने जीवन का हिस्सा बनाएंगे तथा देश की सभी अन्य विधान सभाओं के सम्मुख एक आदर्श प्रस्तुत करेंगे।

- श्री रणवीर गंगवा
उपाध्यक्ष, हरियाणा विधानसभा

‘बड़े भाई’ से हक की लड़ाई

*1966 में राज्य पुनर्गठन के वक्त हरियाणा और पंजाब के बीच 40:60 के अनुपात में बंटवारा हुआ, लेकिन विधानसभा भवन में हरियाणा के लिए मात्र 37 फीसदी जगह तय की गई। पंजाब ने आज तक वह जगह भी उसे नहीं दी। फिलहाल पंजाब के पास उसके हिस्से की 63 फीसदी जगह के साथ-साथ हरियाणा के हिस्से वाले 20 कमरों पर भी कब्जा है। सदन संदेश के प्रधान संपादक **दिनेश कुमार** की रिपोर्ट...*

चंडीगढ़ के सेक्टर 1 में स्थित विधान भवन विश्व धरोहर है। इसके वास्तु और संरचना के कारण यूनेस्को ने इसे यह सर्वोच्च दर्जा दिया है। वहीं, हरियाणा की धरती से विश्व ने गीता के माध्यम से उत्कृष्ट जीवन जीने की कला सीखी है। यही पर भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को विराट स्वरूप के दर्शन करवाए थे। पार्थ को न्याय की परिभाषा भी समझाई थी। विश्व को न्याय और दर्शन का पाठ पढ़ाने वाला हरियाणा आज विश्व धरोहर में अपना हिस्सा न मिलने के कारण अन्याय का दंश झेल रहा है। हरियाणा के हक को किसी और ने नहीं बल्कि उसके बड़े भाई कहे जाने वाले पंजाब ने कब्जाया है।

1 नवंबर 1966 को पंजाब पुनर्गठन अधिनियम (1966) के माध्यम से हरियाणा राज्य अस्तित्व में आया। पंजाब और हरियाणा का 60:40 के अनुपात में बंटवारा हुआ। इसके साथ ही दोनों राज्यों की राजधानी चंडीगढ़ तय हुई। तब से हरियाणा और पंजाब के विधानसभा सचिवालय चंडीगढ़ प्रशासन के एक ही भवन में हैं। इस विधान भवन का कुल क्षेत्रफल 66 हजार 430 वर्ग फुट है। 17 अक्तूबर 1966 को चंडीगढ़ यूटी के कैपिटल प्रोजेक्ट के मुख्य अभियंता की मौजूदगी में हरियाणा और पंजाब के बीच हुए समझौते के अनुसार कुल क्षेत्र में से 30 हजार 890 वर्ग फुट क्षेत्र पंजाब विधान सभा सचिवालय के लिए, 10 हजार 910 वर्ग फुट क्षेत्र पंजाब विधान परिषद के लिए जबकि 24 हजार 630 वर्ग फुट क्षेत्र हरियाणा विधानसभा सचिवालय के लिए निर्धारित हुआ था। इस प्रकार 66 हजार 430 वर्ग फुट क्षेत्र में से हरियाणा के हिस्से में मात्र 24 हजार 630 वर्ग फुट क्षेत्र आया। यह 40 फीसदी की बजाय 37 फीसदी बनता है। स्पष्ट है कि 63 फीसदी क्षेत्र पंजाब के हिस्से और 37 फीसदी क्षेत्र हरियाणा के हिस्से का तय हुआ, लेकिन जितना हिस्सा हरियाणा का तय हुआ था, वह भी आज तक नहीं मिल सका। हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष श्री ज्ञान चंद गुप्ता जी इसी 37 फीसदी क्षेत्र को लेने के लिए जद्दोजहद कर रहे हैं।

ये कैसा 60 : 40 ?

हरियाणा के हिस्से में आए 37 फीसदी क्षेत्र में से 10 फीसदी पर पंजाब ने कब्जा किया हुआ है। इसलिए अब हरियाणा के पास मात्र 27 फीसदी जगह है।

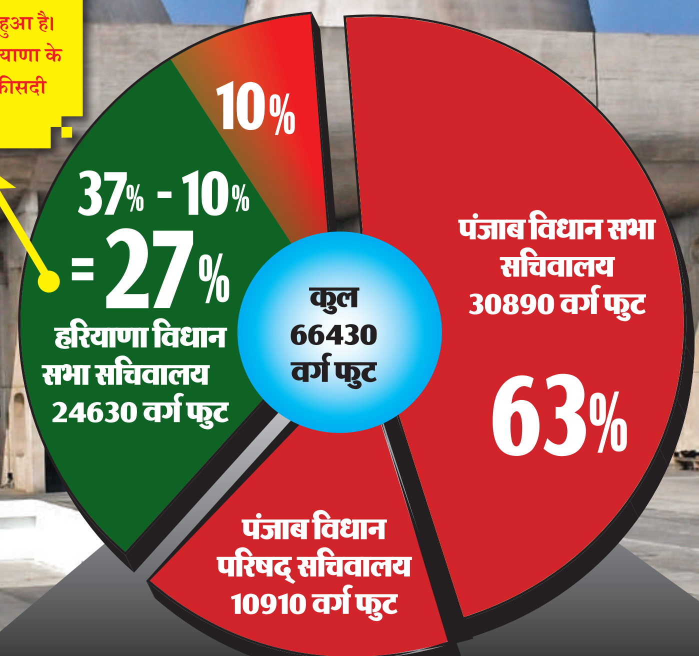

17 अक्तूबर 1966 को पंजाब के राज्यपाल कार्यालय में चंडीगढ़ यूटी कैपटिल प्रोजेक्ट के मुख्य अभियन्ता द्वारा बैठक बुलाकर विधान भवन इमारत को तीन भागों में इस प्रकार आंबटित किया था।

वर्तमान विधानसभा अध्यक्ष श्री ज्ञान चंद गुप्ता जी हरियाणा का हक लेने के लिए कमर कस चुके हैं। पहले पंजाब विधानसभा के अध्यक्ष से मुलाकात कर हरियाणा के हिस्से में आए कमरे खाली करने की मांग की। उसके बाद उन्होंने पंजाब के राज्यपाल एवं चंडीगढ़ के प्रशासक के सम्मुख मसला रखा। आश्वासन सकारात्मक मिला है। फैसले का इंतजार है।

हरियाणा विधान सभा को 24 हजार 630 वर्ग फुट स्थान आंबटित किया गया था। उसकी वर्तमान स्थित इस प्रकार है :-

क्रं. स	हरियाणा विधान सभा के लिए आंबटित की गई जगह	हरियाणा विधान सभा सचिवालय के नियन्त्रण में जगह	वर्तमान स्थिति
1.	परिषद् सदन लॉबी सहित सदन	हरियाणा विधान सभा के पास है।	
2.	भूतल (बेसमैंट)(उत्तर-पूर्व) कक्ष संख्या 23, 24, 25, 26 (4 कमरें)	24 और 25 हरियाणा विधान सभा के पास है।	23 और 26 पंजाब विधान सभा के पास है।
3.	निचली मंजिल (ग्रांऊड फ्लोर) (दक्षिण-पश्चिम) कक्ष संख्या 27, 28, 29 और 30 (4 कमरें)		पंजाब विधान सभा के पास है।
4.	पहली मंजिल (दक्षिण-पश्चिम) कक्ष संख्या 66 67, 68, 69, 70 और 71 (6 कमरें)	हरियाणा विधान सभा के पास हैं	
5.	पहली मंजिल (उत्तर-पश्चिम) कक्ष संख्या 99, 100, 101, 102, 103, 104, 106, 107, 108, 109, 110, 111, 112 और 113 (14 कमरें)		ये सभी कक्ष पंजाब विधान सभा के पास हैं।
6.	दूसरी मंजिल (उत्तर-पश्चिम) कक्ष संख्या 123, 124, 125, 126, 127 और 128 (6 कमरें)	सभी हरियाणा विधान सभा के पास हैं।	
7.	दूसरी मंजिल (उत्तर-पूर्व) कक्ष संख्या 154, 155, 156, 158, 159 और 160 (6 कमरें)	ये कक्ष पंजाब विधान सभा के पास है और इसी तरह आपसी सहमति से पंजाब के सात कक्ष संख्या 129 से लेकर 135 तक दूसरी मंजिल (उत्तर-पश्चिम) पर हरियाणा विधान सभा के पास है।	आपसी सहमति अनुसार बंटवारा ठीक है।

1 मार्च 2019

हरियाणा विधान सभा सचिवालय की ओर से एक अर्ध सरकारी पत्र के माध्यम से चण्डीगढ़ प्रशासन के मुख्य अभियंता के साथ पत्राचार किया गया, लेकिन इस बारे में चण्डीगढ़ प्रशासन द्वारा की गई कार्यवाही से हरियाणा विधान सभा सचिवालय को अवगत नहीं करवाया गया।

6 दिसंबर 2019

हरियाणा विधान सभा अध्यक्ष श्री ज्ञान चंद गुप्ता जी ने पंजाब विधान सभा के अध्यक्ष से औपचारिक मुलाकात की और लिखित में निवेदन किया कि विधान भवन की इमारत का बंटवारा 17 अक्तूबर1966 को हुए फैसले अनुसार किया जाए।

27 मई 2020

पंजाब विधान सभा के अध्यक्ष ने हरियाणा विधान सभा अध्यक्ष को आश्वासन दिया कि पंजाब और हरियाणा विधान सभा के अधिकारियों की संयुक्त बैठक बुलाई जाएगी और इन्हीं अधिकारियों की रिपोर्ट के अनुसार मामले का निपटान कर लिया जाएगा, लेकिन हरियाणा के आग्रह के बावजूद बैठक नहीं बुलाई गई।

2 जून 2020

पंजाब के इस रवैये के बाद श्री ज्ञान चंद गुप्ता जी ने राज्यपाल श्री वीपी सिंह बदनौर जी से वीडियो कॉन्फ्रेंस की। बदनौर ने आश्वासन दिया कि वे इस विवाद को सुलझाने के लिए जल्द तीन वरिष्ठ अधिकारियों की समिति गठित करेंगे। इस समिति में दोनों राज्य विधानसभाओं के सचिव और चंडीगढ़ प्रशासन के मुख्य अभियन्ता शामिल होंगे। समिति को एक सप्ताह में अपनी रिपोर्ट देनी थी।

2 जून 2020

इसी दिन श्री ज्ञान चंद गुप्ता जी ने राज्यपाल श्री वीपी सिंह बदनौर जी को विस्तृत पत्र लिख कर 1966 के समझौते का पूरा ब्यौरा और विधान भवन की वर्तमान स्थिति की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने चिट्ठी में तल अनुसार उन सभी कमरों का ब्यौरा दिया जो हरियाणा के हिस्से में आए थे और फिलहाल उन पर पंजाब का कब्जा है।

29 जून 2020

हरियाणा विधान सभा सचिवालय के सचिव श्री राजेंद्र कुमार नांदल जी ने राज्यपाल के प्रधान सचिव जे.एम.बालामुरगन को पत्र लिख कर 2 जून 2020 को हुई वीडियो कॉन्फ्रेंस में चर्चा किए गए विषय की ओर ध्यान दिलाया। यह भी बताया कि राज्यपाल के निर्देशानुसार न तो अधिकारियों की कमेटी का गठन किया गया और न ही कोई ऐसी रिपोर्ट तैयार की गई।

16 जुलाई 2020

हरियाणा विधान सभा अध्यक्ष श्री ज्ञान चंद गुप्ता जी ने पंजाब के राज्यपाल को पत्र लिख कर मांग की कि दोनों विधानसभा सचिवों की बजाय चंडीगढ़ प्रशासन के मुख्य अभियन्ता और वरिष्ठ आईएएस अधिकारियों की समिति बनाई जाए। इस समिति में यू.टी.,केंद्र सरकार कैडर के अधिकारी ही शामिल हों। ■

कोविड 19

विकराल विपदा का मुकाबला करती वीरों की धरती

विधानपालिका और कार्यपालिका ने किए अथक प्रयास

◆ दिनेश कुमार

कोविड-19, समस्या बड़ी है और बढ़ती जा रही है। सुरसा मुख की तरह। देखते ही देखते। आंकड़े उछल रहे हैं। इस गति से कि गणना करते-करते ही बदल जाती है। मीडिया कवरेज करते-करते हांप सा गया। दर्शक और पाठक भी पूरा दिन ऐसी खबरें के फॉलो-अप कैसे देखें? जहन में डर को समेटे उबाउपन भी अब शुरू हो चुका है। समस्त विश्व को एक साथ चपेट में लेनी वाली ऐसी महामारी इतिहास में कम ही देखने को मिली है।

चुनौती बड़ी हो तो उससे निपटने का जज्बा भी उतना ही बड़ा चाहिए। हिम्मत चाहिए। योजनाबद्ध प्रयास चाहिए। इसी हिम्मत, साहस, प्रयास और कर्मशीलता का सुमेल हरियाणा में सभी ने देखा। यहां जनता की समझदारी के साथ-साथ लोकतंत्र के दो प्रमुख स्तम्भों की एकजुटता ने महामारी की विकरालता को काबू किया। ये दो स्तम्भ हैं- विधान पालिका और कार्यपालिका।

यह सर्वविदित है कि योजनाओं के क्रियान्वयन का सीधा-सीधा दायित्व कार्यपालिका का है। लेकिन जब समाज के सम्मुख इतनी बड़ी चुनौती हो तो विधान पालिका कैसे अपने कदम पीछे रख सकती है।

हरियाणा में कोविड-19 की पहली पदचाप मार्च के पहले सप्ताह में सुनाई दी। 3 मार्च 2020 को मुख्य सचिव की अध्यक्षता में प्रदेश के वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक हुई। इसके साथ ही कोरोना ने यहां का दरवाजा खटखटा दिया और 6 मार्च को गुरुग्राम में पेटीएम के एक कर्मचारी की कोरोना रिपोर्ट पॉजिटिव आ गई। 7 मार्च को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने नोवेल कोरोना को महामारी घोषित किया। 11 मार्च को प्रदेश की मनोहर सरकार ने भी इसे महामारी घोषित कर किया। 14 मार्च को मुख्यमंत्री ने टीवी, रेडियो व सोशल मीडिया पर कोरोना को लेकर जागरूकता का संदेश जारी किया।

इस वैश्विक महामारी से पीड़ित लोगों की मदद के लिए प्रदेश सरकार ने 'हरियाणा कोरोना रिलिफ फंड' की स्थापना की है। सरकार के इस प्रयास से जनता और सामाजिक संगठनों के प्रयासों को एक प्रवाह में ला दिया। इससे लोगों में समर्पण का भाव तीव्र हुआ। जनता और सरकार की सहभागिता से यह प्रयास दिनोंदिन यशस्वी हुआ।

इसके साथ ही शुरू हो गया जागरूकता और राहत अभियान। एक तरफ श्री मनोहर लाल जी बैठक दर बैठक करके इससे निपटने के प्रयास करने लगे तो वहीं विधान पालिका के मुखिया श्री ज्ञान चंद गुप्ता जी ने विधायकों और पूर्व विधायकों से एकजुट होकर आगे आने का आह्वान किया। शुरुआत स्वयं से की और स्वैच्छिक अनुदान से 3 करोड़ रुपये 'हरियाणा कोरोना रिलीफ फंड' में दे दिए। विधानसभा उपाध्यक्ष श्री रणबीर गंगवा जी ने 2 करोड़ रुपये दिए। विस अध्यक्ष के आह्वान पर प्रदेश के सभी 90 विधायकों ने एक माह का वेतन हरियाणा कोरोना राहत कोष के लिए दे दिया। इसके साथ ही विधानसभा अध्यक्ष ने प्रदेश के सभी पूर्व विधायकों से कम से कम एक माह की पैंशन देने का आह्वान किया।

इसके बाद तो कोरोना संक्रमण की वैश्विक महामारी से निपटने के लिए हरियाणा विधानसभा के अध्यक्ष से लेकर चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी तक जमकर दरियादिली दिखाने लगे। विधानसभा सचिवालय के अधिकारियों और कर्मचारियों ने दिल खोल कर दान किया। विधानसभा अध्यक्ष ज्ञानचंद गुप्ता ने विधायकों और पूर्व विधायकों से लॉकडाउन को सफल बनाने के लिए जनता को जागरूक करने का आह्वान किया।

श्री गुप्ता ने पूर्व विधायकों से आग्रह किया कि वे इस प्रदेश के यशस्वी जनप्रतिनिधि रहे हैं, इसलिए इस संकटकाल में भी अपनी सामाजिक जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए उन्हें अधिकाधिक आर्थिक सहयोग करना चाहिए। इसके लिए वे कम से कम एक माह की पैंशन देंगे तो इस महायज्ञ में पवित्र आहुति साबित होगी।

श्री गुप्ता के आह्वान के बाद प्रदेश के सभी पूर्व विधायकों ने अपनी एक माह की पेंशन हरियाणा कोरोना राहत कोष में देने का निर्णय लिया। पूर्व विधायक एसोसिएशन के अध्यक्ष नफे सिंह राठी ने विधानसभा अध्यक्ष से मुलाकात कर इस आशय का पत्र सौंपा। इसके बाद श्री ज्ञान चन्द गुप्ता जी ने मुख्यमंत्री को चिट्ठी भेज सभी विधायकों की एक माह की पेंशन हरियाणा कोरोना राहत कोष में जमा करवाने संबंधी प्रक्रिया सम्पन्न करवाने का निवेदन किया। उधर, जननायक जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष सरदार निशान सिंह ने भी अपनी पार्टी के सभी पूर्व विधायकों की एक माह की पेंशन हरियाणा कोरोना राहत कोष में जमा करने का सहमति पत्र विधानसभा अध्यक्ष को सौंपा। ■

विधान सभा के माध्यम से दूसरे राज्य के कर्मियों को राहत

21 अप्रैल 2020 को माननीय लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिड़ला जी ने वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से देश भर के विधान सभा अध्यक्षों के साथ बैठक की। इस बैठक में हरियाणा विधानसभा श्री ज्ञान चन्द गुप्ता जी ने प्रदेश के हालात का ब्यौरा दिया। सभी विस अध्यक्षों ने अपने-अपने राज्य में कोरोना महामारी पर काबू पाने के लिए सरकारों द्वारा किए जा रहे प्रयासों की जानकारी साझा की। लोकसभा अध्यक्ष ने सुझाव दिया कि सभी विधानसभाओं में एक नियंत्रण कक्ष बनाया जाए। हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष ज्ञान चंद गुप्ता ने कॉन्फ्रेंस में बताया कि प्रदेश सरकार ने कोरोना संक्रमण के कारण बनी परिस्थितियों पर काबू पाने के लिए अनेक कदम उठाए हैं। प्रदेश में कोई भी भूखा न सोए इसके लिए पूरे प्रबंध किए गए हैं। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला जी ने हरियाणा सरकार के प्रयासों और यहां के जनप्रतिनिधियों की भूमिका की सराहना की। ■

बड़ी चुनौती थी मुनाफाखोरी और जमाखोरी को रोकना

- 24 मार्च को मुख्य सचिव की अध्यक्षता में कोविड-19 रोकने के लिए समन्वय कमेटी की बैठक।
- आवश्यक वस्तुओं की दरों में अनावश्यक बढ़ोतरी नहीं होने दी। मुनाफाखोरी व जमाखोरी पर रोक।
- अनियमितताएं बरते जाने पर 765 चालान किये। 21 आपराधिक केस दर्ज। 12 हजार 203 छापे।
- 22 मई तक 4,86,124 डिस्ट्रेस राशन टोकन वितरित किये गये। 12,90,847 लोग लाभांवित।
- मदद के लिए हर जिले के प्रभारी के रूप में किसी मंत्री अथवा सांसद की ड्यूटी लगाई।
- विशेष स्थिति में जाने के लिए लोगों को ई-पास जारी करने के लिए पोर्टल बनाया।
- वायरस की रोकथाम के लिए सभी 87 पालिकाओं को 288.92 करोड़ रुपये अनुदान के रूप में जारी।
- प्रदेश में गुटका व पान मसाले पर एक साल के लिए प्रतिबंध लगाया गया।
- 8 अप्रैल को मुख्यमंत्री ने दलों के प्रतिनिधियों से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग की। 300 धर्मगुरुओं से भी बातचीत।
- 'हरियाणा सहायक' पोर्टल बनाया। 'जनसहायक' (हैल्प मी) मोबाइल एप्लीकेशन लॉन्च।
- 'हरियाणा ब्याज छूट योजना' का वेबपोर्टल शुरू। बिना किसी कोलेटरल के लोन लेना संभव।
- सेनेटाइजेशन और ऑनलाइन बुकिंग के साथ रोडवेज की बसों का संचालन। यात्रियों की थर्मल स्क्रीनिंग।
- शिवरात्रि की पूर्व संध्या पर हरिद्वार से गंगा जल लाने की व्यवस्था की।
- आपदा में फंसे व्यक्तियों के खाने-ठहरने की व्यवस्था। 21 अप्रैल तक 297 ठहराव केन्द्रों में 8520 लोग ठहरे।
- सब्जियां व राशन की सप्लाई के लिए पालिकाओं के कर्मचारी, जनप्रतिनिधियों व संस्थाओं में तालमेल करवाया।
- इनके सहयोग से 21 अप्रैल तक 5 लाख 28 हजार 285 परिवारों को सूखे राशन की आपूर्ति की गई।
- 90 लाख 68 हजार 128 व्यक्तियों को तैयार भोजन उपलब्ध करवाया। 556 सामुदायिक रसोईघर बनाए।
- 25 से अधिक मकैनिकल स्वीपिंग मशीनों से 615 कि.मी. सड़कों की प्रतिदिन सफाई। 95 से 100 प्रतिशत कूड़ा उठाया।
- बस अड्डों, रेलवे स्टेशनों, सरकारी कार्यालयों व अन्य सार्वजनिक स्थानों पर कैमिकल स्प्रे नियमित रूप से।

> *समाज का बहुत बड़ा वर्ग स्वप्रेरणा से सहयोग के लिए आगे आया। हरियाणा के लोगों में सहज रूप से ही दान की प्रवृत्ति है। इसलिए संकट की इस घड़ी में आम से लेकर खास सभी वर्ग आर्थिक सहयोग के लिए बढ़-चढ़ आगे आ रहे हैं। प्रत्येक वर्ग के लोग अपने सामर्थ्य से बढ़कर दान कर रहे हैं।*
>
> **- ज्ञान चंद गुप्ता**
> माननीय अध्यक्ष, हरियाणा विधान सभा

हरियाणा सरकार ने न सिर्फ प्रदेशवासियों को कोविड महामारी की चुनौती से बचाया, अपितु पूर्णबंदी के कारण प्रभावित अर्थ व्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए भी अनेक कार्ययोजनाएं बनाईं। कोरोना काल खंड में विभिन्न क्षेत्रों के लिए सरकार की ओर से लिए गए निर्णय :-

चिकित्सा पेशेवरों को बंपर सुविधाएं

कोरोना से लड़ रहे डाक्टरों, नर्सों, पैरा मेडिकल स्टॉफ और अन्य स्टॉफ का वेतन दोगुणा किया ◆ 952 नए डॉक्टर मेडिकल ऑफिसर के रूप में नियुक्त ◆ चिकित्सा और पैरा-मेडिकल स्टॉफ को एक्सटेंशन ◆ डॉक्टरों, नर्सों व कर्मचारियों के लिए एक्सग्रेशिया राशि क्रमश: 50 लाख, 30 लाख व 20 लाख रुपये तय की ◆ निजी अस्पतालों के स्टॉफ को भी एक्सग्रेशिया ◆ मोबाइल डिस्पेंसरियां चलाई ◆ पर्यटन व पीडब्ल्यूडी के सभी विश्राम गृहों में स्वास्थ्य सेवाओं में लगे कर्मियों के ठहरने का निःशुल्क प्रबंध।

कर्मचारियों का रखा ख्याल

बायोमैट्रिक हाजिरी न लगाने के निर्देश, सेनिटाइजर और मास्क उपलब्ध करवाए गए ◆ घर से कार्य करने के निर्देश ◆ बाद में ग्रुप सी और डी के 50 प्रतिशत कर्मचारी ही कार्यालय बुलाए गए ◆ पानी व सीवरेज के बिलों, सम्पत्ति कर तथा पालिकाओं की दुकानों का किराया जमा कराने की तिथि बढ़ाई ◆ नियमित, अनुबंधित व ठेकेदारों के माध्यम से कार्यरत कर्मचारियों का वेतन समय पर जमा करवाना सुनिश्चित किया।

किसानों को छूट तो जरूरी थी

फसल ऋणों की अदायगी की समय सीमा में छूट ◆ 4 प्रतिशत की ब्याज दर में भी छूट ◆ खरीद केन्द्रों पर मास्क और हैंड सेनेटाइजर की व्यवस्था ◆ हर हाल में फसल की खरीद सुनिश्चित की ◆ हारवेस्टर, कंबाइन व ट्रैक्टरों की आवाजाही को मंजूरी ◆ सेनिटाइज्ड और मेडिकल चैकअप भी।

उद्योगों को प्रोत्साहन से पटरी पर आई अर्थव्यवस्था

सभी व्यावसायियों से कर्मचारियों के प्रति मानवीय दृष्टिकोण अपनाते हुए वेतन न काटने का अनुरोध ◆ लॉकडाउन अवधि के दौरान कच्चे माल और तैयार पक्के माल की आवाजाही की अनुमति ◆ दो एन-95, 16 पीपीई किट बनाने वाले एम.एस.एम.ई. निर्माताओं को केंद्र से अनुमति दिलाई ◆ इससे राज्य में 85,000 पीपीई किट और 40,000 एन-95 मास्क की दैनिक उत्पादन क्षमता बढ़ गई ◆ एमएसएमई के लिए 56 समूहों की पहचान। लगभग 70,000 एमएसएमई लाभान्वित होंगे ◆ 4194 स्टार्ट-अप, 4119 स्टैंडअप का पंजीकरण ◆ पंजाब से कहीं अधिक। स्टैंडअप को 868 करोड़ का ऋण ◆ 56,061 औद्योगिक इकाइयों में काम शुरू ◆ 38.15 लाख कामगार काम पर लौटे ◆ राजस्व संग्रहण लगभग पिछले साल के बराबर ◆ मुद्रा योजना (शिशु श्रेणी) के तहत 50,000 रुपये के ऋण 5 प्रतिशत ब्याज पर ◆ पांच लाख कवर होंगे ◆ रियल एस्टेट उद्योग के लिए सीएलयू, लाइसेंस आदि पर 1 मार्च से 30 सितंबर तक मोरटेरियम दिया।

जनता की समझदारी ने भी रोके कोरोना के कदम, शोध में खुलासा

पंचनद शोध संस्थान के शोध में साबित हुआ कि कोरोना काल में हरियाणा और विशेषकर पंचकूला जिले के लोगों ने जिम्मेदार नागरिक होने का प्रमाण दे दिया। इस शोध पत्र का विमोचन हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष श्री ज्ञान चन्द गुप्ता जी ने 25 जून को विधानसभा सचिवालय में आयोजित एक ऑनलाइन कार्यक्रम में किया। कार्यक्रम में पंचनद शोध संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. कृष्ण सिंह आर्य, निदेशक प्रो. बीके कुठियाला भी मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन हरियाणा विधानसभा के मीडिया एवं संचार अधिकारी दिनेश कुमार ने किया। कोविड 19 के पंचकूला मॉडल के शोधार्थी सुमन्तो घोष ने कहा कि इस शोध में 1 जून तक के आंकड़ों का अध्ययन किया गया है।

हरियाणा के रोगी को पीजीआई में दाखिल न करने पर केंद्र को लिखा पत्र

चंडीगढ़ स्थित स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (पीजीआई) की ओर से पंचकूला के कोरोना संक्रमित रोगी के उपचार से मना करने पर हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष श्री ज्ञान चन्द गुप्ता जी ने कड़ी आपत्ति जताई। इस मामले पर संज्ञान लेते हुए श्री ज्ञान चन्द गुप्ता जी ने 18 अप्रैल को केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन को चिट्ठी लिख कर जांच एवं आवश्यक कार्रवाई की मांग की। उन्होंने कहा कि पीजीआई राष्ट्रीय स्तर का चिकित्सा संस्थान है और यह विशेष रूप से पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और चंडीगढ़ की जरूरतों को पूरा करता है। ऐसे में पंचकूला के गम्भीर रोगी को उपचार से मना करना संगीन मामला है। यह चिकित्सा पेशे की नैतिकता का भी उल्लंघन है।

कौशल विकास मिशन ने भी दिया विधानसभा का साथ

हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष श्री ज्ञान चन्द गुप्ता जी की ओर से जारी कोविड 19 के खिलाफ लड़ाई में हरियाणा कौशल विकास मिशन ने भी साथ दिया है। मिशन के निदेशक एवं श्री विश्वकर्मा स्किल यूनिवर्सिटी के कुलपति राज नेहरू ने 15 जुलाई को विधानसभा अध्यक्ष ज्ञान चंद गुप्ता को दो हजार मास्क भेंट किए। ये मास्क विधानसभा सचिवालय के कर्मचारियों और उनके परिजनों की कोविड से रक्षा करने में सहयोगी साबित हुए।

हरियाणा विधान सभा अध्यक्ष द्वारा वर्ष 2020-21 के लिए गठित समितियों के चेयरपर्सन एवं सदस्य

लोक उपक्रमों संबंधी समिति

श्री असीम गोयल (चेयरपर्सन)

श्री देवेन्द्र सिंह बबली
श्री अभय सिंह चौटाला
श्री नीरज शर्मा
श्री दूड़ा राम
श्री कुलदीप वत्स
श्री मोहन लाल बड़ोली
श्री चिरंजीव राव
श्री राजेश नागर

सरकारी आश्वासनों के बारे में समिति

श्री जगबीर सिंह मलिक (चेयरपर्सन)

श्री अमरजीत ढाण्डा
श्री बिशन लाल सैनी
श्री सुभाष गंगोली
श्री राजेन्द्र सिंह जून
श्रीमती निर्मल रानी
श्री गोपाल काण्डा
श्री दूड़ा राम विशेष आमंत्रित
श्री प्रदीप चौधरी
श्री महिपाल ढाण्डा

अधीनस्थ विधान समिति

श्री राम निवास (चेयरपर्सन)

श्री सुधीर कुमार सिंगला
डॉ. रघुबीर सिंह कादयान
श्री बलदेव राज महाजन हरियाणा के महाधिवक्ता
श्री जयवीर सिंह
श्री राम कुमार कश्यप विशेष आमंत्रित
श्री बलबीर सिंह
श्री अमित सिहाग
श्री सोमबीर सांगवान
श्री बिशम्बर सिंह

याचिका समिति

श्री घनश्याम दास अरोड़ा (चेयरपर्सन)

श्री बलराज कुण्डू
श्रीमती गीता भुक्कल
श्री जगबीर सिंह मलिक विशेष आमंत्रित
श्रीमती शकुन्तला खटक
श्री राम निवास
श्री संजय सिंह
श्री लक्ष्मण सिंह यादव

विशेषाधिकार समिति

डॉ. कमल गुप्ता (चेयरपर्सन)
श्री कुलदीप बिश्नोई
श्रीमती किरण चौधरी
श्री हरविन्द्र कल्याण
श्रीमती सीमा त्रिखा
श्री असीम गोयल
श्री सत्य प्रकाश
श्री वरुण चौधरी
श्री अमरजीत ढाण्डा
श्री सोमबीर सांगवान

स्थानीय निकायों एवं पंचायती राज संस्थाओं संबंधी समिति

डॉ. कमल गुप्ता (चेयरपर्सन)

श्री राकेश दौलताबाद
श्री कुलदीप बिश्नोई
श्री अमरजीत ढाण्डा
श्री घनश्याम सर्राफ
श्री सुरेन्द्र पंवार
श्रीमती सीमा त्रिखा
श्री धर्म सिंह छौकर
श्री बिशम्बर सिंह

जन स्वास्थ्य, सिंचाई, बिजली तथा लोक निर्माण कार्यों (भवन तथा सड़कें) सबन्धी विषय समिति

श्री दीपक मंगला (चेयरपर्सन)

श्री देवेन्द्र सिंह बबली
मोहम्मद इलियास
श्री शमशेर सिंह गोगी
श्री विनोद भ्याणा
श्री मामन खान
श्री लीला राम
श्री प्रवीण डागर
डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा

अनुसूचित जातियों, जनजातियों तथा (पिछड़ा वर्गों) के कल्याण के लिए समिति

श्री ईश्वर सिंह (चेयरपर्सन)

श्री चिरंजीव राव
श्री जगदीश नैय्यर
श्री धर्म पाल गोंदर
श्री लक्ष्मण नापा
श्री राम करण
श्री सत्य प्रकाश
श्री शीशपाल सिंह
श्रीमती रेणु बाला

शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, चिकित्सा शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं संबंधी विषय समिति

श्रीमती सीमा त्रिखा (चेयरपर्सन)

श्री नयन पाल रावत
डॉ. रघुबीर सिंह कादयान
श्री शीशपाल सिंह
श्री जगदीश नैय्यर
श्रीमती शैली
श्री राम कुमार कश्यप
श्रीमती नैना सिंह चौटाला
डॉ. कमल गुप्ता

प्री बजट सत्र

'सबकी राय-अच्छी राय' जानने के लिए 3 दिन मंथन

इसे कार्यपालिका और विधानसभा पालिका की जनता के प्रति बढ़ती जवाबदेही का ही परिणाम कहा जाएगा कि इस बार हरियाणा में प्री बजट चर्चा की परंपरा प्रारंभ हुई। बजट सत्र से पूर्व तीन दिन का प्री बजट सत्र आयोजित किया गया। 17 से 19 फरवरी 2020 तक चले इस सत्र का उद्देश्य था कि बजट तैयार करने से पहले सभी दलों के विधायकों से चर्चा कर प्रदेश की जरूरतों को समझा जाए। इन दिनों में 75 विधायकों ने मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी के सम्मुख जनता से जुड़े विषयों को रखा। बता दें कि प्रदेश में वित्त मंत्रालय का कार्यभार मुख्यमंत्री संभाल रहे हैं, इसी के चलते बजट को तैयार करने की जिम्मेदारी उन्होंने ही निभाई।

संपादकीय पेज 13 का शेष...

संविधान के सृजनकर्ताओं का दृष्टिकोण जनप्रतिनिधियों के लिए सदैव मार्गदर्शक रहा है और रहेगा। विभिन्न विषयों पर उनकी क्या सोच रही, इस सोच के यर्थाथ रूप देने के लिए उन्होंने संविधान में क्या-क्या प्रावधान किए, इसकी बानगी भी हमें सदैव ध्यान में रखनी होगी। 9 नवंबर 1946 से 24 नवंबर 1949 तक संविधान निर्माण के लिए आयोजित 9 सत्रों के मंथन से निकला अमृत भी हम अपने पाठकों को नियमित रूप से छकाते रहेंगे।

समय की आवश्यकता के अनुसार संविधान में संशोधनों का क्रम इसके लागू होने के साथ ही शुरू हो गया था। ठीक उसी प्रकार सदन की परंपराएं और कार्यवाही के नियम भी उत्तरोत्तर अपने श्रेष्ठतम की ओर बढ़ते रहे हैं। हरियाणा विधानसभा की कार्यशैली में हो रहे सुधार भी सदन संदेश का मुख्य विषय रहेगा। विकास के पथ पर अग्रेसर हरियाणा को विशिष्ट पहचान दिलाने वाले उपक्रमों का भी हम यहां उल्लेख करेंगे।

लोकतंत्र हमारे संविधान की आत्मा है। इस व्यवस्था में जनता अपने हितों की रक्षा और खुशहाल भविष्य की गाथा गढ़ने के लिए अपने प्रतिनिधि चुनती है, जिन्हें जनप्रतिनिधि कहते हैं। ऐसे विधायकों की लेखनी का साक्षात्कार भी इस पत्रिका के माध्यम से हो सकेगा। इसके साथ ही हरियाणा विधान सभा के अनुभवी अधिकारीगण और कर्मचारियों की प्रतिभा का अवलोकन भी पाठक इस पत्रिका में करेंगे।

सदन संवाद का यह जन्मांक है, इसलिए बहुत से विषय ऐसे भी रहे होंगे जो अभी हमारे ध्यान में नहीं आ सके होंगे। इसके लिए हम सुधी पाठकवृंद से निवेदन करते हैं कि वे समय-समय पर ऐसे जनोपयोगी विषयों और तथ्यों से हमें अवगत करवाते रहेंगे। आप हमें हमारी त्रुटियों से भी अवगत करवाएंगे तो इसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे, चूंकि यही उत्तरोत्तर सुधार का तरीका है। ■

हरियाणा राज्य की स्थापना 1 नवंबर 1966 को हुई। 6 दिसंबर को पहली विधानसभा का प्रथम सत्र शुरू हुआ। तब से यहां निर्बाध रूप से सदनीय संवाद के रूप में विमर्श का क्रम जारी है। सदन संदेश के इस स्थायी कॉलम में हम हरियाणा विधान सभा में हुए भाषणों के अंश प्रकाशित कर रहे हैं। पहले अंक में प्रस्तुत हैं विधान सभा की प्रथम अध्यक्ष श्रीमती शन्नो देवी जी और नेता प्रतिपक्ष श्री मंगल सेन जी के भाषण। यह भाषण 1966 में दिए गए थे।

श्रीमती शन्नो देवी (प्रथम अध्यक्ष, हरियाणा विधान सभा) : हरियाणा विधान सभा के मुख्य मंत्री जी ने तथा यहां बैठे सब साथियों ने अपनी नाचीज़ बहन के कंधों पर जो बोझ डाला है इस के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं, जिन से मैं आप सब का शुक्रिया अदा करूं। मेरी तो भगवान से यहीं प्रार्थना है कि यह जो एक नया प्रान्त बना है जिस की यह जो नई विधान सभा है इस का नाम ऊंचा हो। मैं तो एक फकीर हूं और फकीरों की तो अपनी कोई जगह हुआ ही नहीं करती। मेरा तो कोई एक स्थान रहा नहीं। किसी स्थान पर मैंने जन्म लिया और किस स्थान पर मैं गई और किस-किस स्थान पर आई इसका कोई हिसाब नहीं है। अब मैं कई वर्षों से हरियाणा में हूं। आज जो हरियाणा प्रांत के इस आगस्ट हाऊस के मैंम्बरों ने मुझ नाचीज़ को स्पीकर चुना है, यह इन्होंने एक बहुत बड़ी बात की है जो हरियाणा के इतिहास में आएगी। मेरा तो आज दिल भरा हुआ है और कोई बात कह नहीं सकती। अगर मैं खुद इस हाऊस की स्पीकर न चुनी जाती और कोई दूसरा चुना जाता तो शायद मैं खुल कर बात भी कर सकती। अब मैं कुछ कह नहीं सकती, लेकिन एक बात मैं कहे बगैर रह ही नहीं सकती। हरियाणा ऋषियों मुनियों की पवित्र भूमि रही है और इस में सदा बड़ी उत्तम रवायात चली आई है और आज भी एक ऐसी ही रवायत इस महान सदन के सदस्यों ने कायम की है। मनु-स्मृति में बड़ा सुन्दर श्लोक कहा गया है-

> ***मैं मंगल कामना करती हूं कि हरियाणा प्रगति करे जैसा कि हमारे मुख्यमंत्री साहिब चाहते हैं कि हरियाणा तरक्की कर के दूसरे सूबों के बराबर हो जाए। यह हम तभी कर सकेंगे अगर हम सब कंधे के साथ कंधा मिलाकर कम से कम खर्च करके और ज़्यादा से ज्यादा काम करेंगे और इस को आगे ले जाने का प्रयत्न करेंगे। अब इस के बाद स्पीकर का काम होता है डिप्टी स्पीकर का चुनाव कराना यह उस वक्त होता है जिस वक्त स्पीकर चाहे। मैं चाहती हूं कि डिप्टी स्पीकर का चुनाव भी हो जाए।***

" यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तु
न पूज्यन्ते, सर्वास्तत्राफल क्रियाः।

जिसका अर्थ है कि जहां स्त्रियों का सम्मान होता है वहां सारे काम सिद्ध होते हैं और जहां स्त्रियों का अपमान होता है वहां सारे काम असफल होते हैं। मुझे कुछ कहते हुए संकोच होता है। मैं तो भगवान से प्रार्थना करती हूं कि जो सम्मान आप सब ने मुझे स्पीकर चुनकर दिया है। मैं अपने इस कार्य को अच्छी तरह से निभा सकूं और यह जो हरियाणा प्रान्त बना है इस को हर प्रकार से ऊंचा ले जा सकूं और यहां अच्छी रवायत कायम करने की कोशिश में मुझे सफलता मिले। आज के दिन मुझे जो यह सम्मान दिया गया है मैं इसके लिए अपने सब साथियों का धन्यवाद करती हूं और साथ ही इन से यह प्रार्थना करती हूं कि हरियाणा की जो आम स्त्रियां हैं वह अभी बहुत पीछे रह गई हुई हैं, उनको हमें प्रगति के पथ पर आगे ले जाना होगा ताकि हरियाणा की गाड़ी सुचारू रूप से चल सके।

इस वक्त मेरा दिल भरा हुआ है और नहीं मेरे पास सब बातों का जवाब देने के लिए समय ही है। लेकिन मेरे एक साथी ने जो कुछ दिक्कतों की ओर मेरा ध्यान दिया है उसके बारे में कुछ कहे बिना में रह नहीं सकती। मैं अर्ज़ करती हूं कि दिक्कतें तो बहुत पड़ी थी जिनका मैं यहां जिक्र नहीं करना चाहती। सिर्फ इतना ही कह देना चाहती हूं कि आज यहां जो हम इस सदन का अधिवेशन कर सके हैं, यह मेरे एक महीना तक के लगातार प्रयत्नों का नतीजा है। अब भी हमारे पास मंत्रियों के बैठने के लिए स्थान नहीं है। खैर, वह भी हासिल करूंगी क्योंकि आप सब जानते हैं कि मेरी गरदन टूट तो सकती है लेकिन झुक नहीं सकती। जो हमारे हकूक हैं वह हमें जरूर मिलने चाहिए, क्योंकि यह हमारी एक नई स्टेट है। यहां पर इस आगस्ट हाऊस में कुछ धमकियों का भी जिक्र किया गया है, जो हरियाणा के जो हकूक हैं उनको छीनने के लिए दी गई हैं, उन धमकियों का भी हम सब ने मिल कर मुकाबला करना है।

एक बात तो मैंने हरियाणा में देखी है कि यहां पर जो शुरुआत हुई है, वह अच्छी हुई है। पहले प्रधान कांग्रेस का चुनाव हुआ वह एक राय से हुआ, फिर मुख्यमंत्री का चुनाव हुआ वह भी एक राय से हुआ और आज जो आप ने एक नाचीज़ बहन को स्पीकर चुना है

वह भी एक राय से चुना है। अगर इसी तरह से हरियाणा में सब काम हम मिलकर एक राय से करते रहे तो इन धमकियों से हमारा कुछ बिगड़ने वाला नहीं। हरियाणा भारत का एक खण्ड है और सुसंस्कृत खण्ड है क्योंकि यह ऋषियों-मुनियों की धरती है। मैं समझती हूं कि आप ने जो मुझे सम्मान दिया वह आप ने भारत भर की स्त्रियों को सम्मान दिया है और एक बात पर तो मुझे भी गौरव प्राप्त हुआ कि जब 1951 में मैं पहली बार डिप्टी स्पीकर चुनी गई थी, चाहे उस वक्त एक ऐसा मौका ही आ गया था और इस पद के लिए और कोई दूसरा मिला नहीं था, तो उस वक्त भी मैं पहली स्त्री ही थी जो सारे भारत में पहली स्त्री डिप्टी स्पीकर चुनी गई थी और आज भी मैं पहली स्त्री हूं जो हरियाणा विधान सभा की स्पीकर चुनी गई हूं क्योंकि और किसी स्टेट की विधान सभा की स्पीकर आज तक कोई स्त्री नहीं चुनी गई है।

श्री मंगल सैन (रोहतक) : अध्यक्ष महोदया, चौधरी चान्द राम ने जो यह प्रस्ताव पेश किया है कि बृहस्पतिवार को नाम-आफिशल बिज़नैस न होकर सरकारी कामकाज़ हो, मैं इसका विरोध करता हूं क्योंकि मैंने स्वयं उस दिन के लिए एक प्रस्ताव दे रखा है कि सारे हरियाणे में कामकाज हिन्दी में ही होना चाहिए और उसे आरम्भ से ही राज्य की भाषा का सम्मान मिलना चाहिए। यह बड़ा महत्वपूर्ण प्रस्ताव है किन्तु सरकारी पार्टी के एक मिनिस्टर साहिब की तरफ से इस प्रकार का प्रस्ताव आ जाना इस बात को जाहिर करता है कि संविधान में आपोज़ीशन को तथा प्राइवेट मैम्बर्ज़ को जो अधिकार मिला है उस पर हरियाणे की असेम्बली की बैठक के पहले दिन से ही कुठाराघात होना शुरू हो गया है। इसलिए में गवर्नमेंट से इस प्रस्ताव को कि उस दिन नॉन-आफिशल बिजनेस को खत्म करके आफिशल बिजनेस को टेकअप किया जाए, सख्त विरोध करता हूं और आप से अपील करता हूं कि मुझे अपने प्रस्ताव पर चर्चा करने का अवसर जरूर मिले। यह तभी सम्भव हो सकता है जब कि नॉन-आफिशल बिजनेस कंडक्ट हो। -6 दिसंबर, 1966 ■

भारतीय संविधान विश्व का सबसे लंबा लिखित संविधान है। इस संविधान को बनाने वाली संविधान सभा में देश के सभी हिस्सों का प्रतिनिधित्व था। पहली बैठक 9 नवंबर 1946 को नई दिल्ली के कॉन्स्टिट्यूशन हॉल, जिसे अब संसद भवन के केंद्रीय कक्ष के नाम से जाना जाता है, में हुई। आज जो संविधान हमारे सम्मुख है, उसके सभी प्रावधानों पर विस्तृत चर्चा हुई। 'सदन संदेश' के इस स्थायी कॉलम में हम संविधान निर्माताओं के वक्तव्यों का उल्लेख कर रहे हैं। पहले अंक में प्रस्तुत हैं संविधान सभा के प्रथम स्थायी अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद का सभा में दिया गया भाषण:-

डॉ. राजेन्द्र प्रसादः बहनों और भाइयों, में उम्मीद करता हूं आप मुझे माफ करेंगे और बुरा न मानेंगे, अगर मैं यह कहूं कि इस वक्त इस भार से मैं अपने को दबा हुआ महसूस कर रहा हूं, जो आपने मुझे इस ऊँचे पद पर चुन करके मेरे कन्धों पर डाला है। आपने मुझे इस पद पर चुनकर एक इतनी बड़ी इज्जत दी है, जो हिन्दुस्तान के किसी भी आदमी के लिए सबसे बड़ी इज्जत हो सकती है। अगर आप माफ करें तो मैं यह भी कहूंगा कि इस देश में जहां जाति-पांति के इतने झगड़े फैले रहते हैं, आपने हमको चुनकर अपनी अपनी जाति से एक तरह बाहर कर दिया है और अपनी जात-पांत में बैठने से मुझे वंचित करके एक अलग दूसरी जगह, दूसरे किस्म की कुर्सी पर बैठने के लिए मजबूर किया है। सिर्फ इतना ही नहीं है कि आपने मुझे अपने से अलग हटा दिया है, बल्कि शायद आप में से हर एक यह भी उम्मीद रखेगा कि इस सभा के कार्यों में मैं कोई ऐसा काम करूं जिससे यह बात जाहिर हो कि मैं किसी एक फिरके का आदमी हूं। आप यह आशा रखेंगे कि यहां जो कुछ मैं करूं वह आप में से हर एक के खिदमतगार की हैसियत से करूं, हर एक के सेवक के रूप में करूं, हर एक के सेवक के रूप में करूं। मेरी कोशिश भी यही होगी कि मैं इस पद को जो आपने मुझे दिया है, ऐसे तरीके से निबाहूं कि आज जिस तरह आप में से बहुतेरे भाइयों ने और मेरी बड़ी बहन ने मुझे मुबारकबाद दिया है। इससे भी और ज्यादा खुशी आप उस दिन जाहिर करें जिस दिन मुझे यहां से हटना पड़े। मैं जानता हूं कि मेरे रास्ते में बड़ी कठिनाइयां हैं। बहुत मुश्किलें हैं। इस विधान परिषद का काम बहुत मुश्किल है। इसके सामने तरह-तरह के सवाल पेश होंगे। ऐसी-ऐसी बातें आएंगी जिनके बारे में फैसला करना किसी के लिए आसान नहीं होगा, मेरे लिये तो हरगिज़ आसान ना होगा। मगर मुझे इस बात का पूरा भरोसा है कि हमें इस काम में हमेशा आपकी मदद मिलती रहेगी। आपने जिस उदारता और फैयाजी के साथ मुझे चुनकर यहां बिठाया है, उसी उदारता और फैयाजी के साथ मेरी मदद करते रहेंगे। विधान परिषद का यह जलसा बड़े कठिन समय में हो रहा है। हम यह मानते हैं कि इस तरह की दिक्कतें, और-और विधान-परिषदों के सामने, जहां-जहां वह हुई हैं, रही हैं। वहां भी आपस में मतभेद रहे हैं और इन मतभदों को जोरों के साथ विधान-परिषद के सामने पेश भी किया गया है। हम यह भी जानते हैं कि बहुत सी विधान-परिषदें लड़ाई-झगड़े के बीच हुई हैं और उनकी बहुत सी कार्रवाइयां भी झगड़े और फसाद के बीच हुई हैं। मगर बावजूद इन दिक्कतों के इन परिषदों ने अपना काम पूरा किया है और जमाने में जो इसके सदस्य हुआ करते थे उन्होंने हिम्मत, सद्भावना, फैयाजी और रवादारी से एक दूसरे के विचारों को सामने रखते हुए आपस में मिलकर इस तरह के विधान तैयार किये हैं, जिन्हें इन देशों के सभी लोगों ने समय पाकर मंजूर किया है। आज बहुत दिनों के बीत जाने के बाद भी उन देशों के लागे इन विधानों को अपने लिए एक बड़ी कीमती चीज़ मानते हैं। कोई कारण नहीं कि हमारी यह विधान-परिषद भी बावजूद इन कठिनाइयों के जो हमारे सामने हैं, अपने काम को उसी खूबी के साथ, उसी सफलता के साथ अंजाम न दे। चाहिए हममें सच्चाई, सच्चाई हममें एक दूसरे के ख्याल के लिए अपने दिल में इज्जत और हुरमत। चाहिए हमको वह ताकत कि हम दूसरे की बातों को सिर्फ समझ ही न सकें, बल्कि जहां तक हो सके उनके दिलों में घुस कर उनको खुद अनुभव कर सकें, महसूस कर सकें और इस तरह से काम सकं कि जिसमें कोई यह न समझे उसकी उपेक्षा की गयी या उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया गया। अगर ऐसा हो, अगर हममें स्वयं ऐसी शक्ति आ जाय तो मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि बावजूद इन कठिनाइयों के और सब मुश्किलों के हम अपन काम में पूरी तरह से कामयाब होकर रहेंगे।

मैं यह जानता हूं कि इस परिषद की पैदाइश तरह-तरह के प्रतिबंधों के साथ हुई है। बहुत से प्रतिबंध तो ऐसे हैं कि मुमकिन है, उन्हें अपने कार्यवाही के सिलसिले में हमें याद भी रखना पड़े। मगर साथ ही मैं यह भी जानता हूं कि इस विधान परिषद को पूरा अधिकार, मुकम्मिल अख्तियार इस बात का है कि वह अपनी कार्रवाई जिस तरीके से चाहे करें। इसके अन्दर वह जो कुछ करना चाहे करें। किसी भी बाहरी ताकत को अख्तियार नहीं है कि इसकी कार्रवाई में वह कुछ भी हस्तक्षेप या दस्तनाज़ी कर सके। इतना ही नही, मैं यह भी मानता हूं कि जो पाबन्दियां इसको जन्म के साथ मिली हैं उनको तोड़ देने और उनको खत्म कर देने का अख्तियार भी इस एसेम्बली को है। आपकी कोशिश यही होनी चाहिए कि हम इन बंधनों से बाहर निकलकर एक ऐसा विधान, एक ऐसा कायदा अपने देश के लिए तैयार करें, जिससे इस देश के हर एक स्त्री-पुरुष को यह मालूम हो जाए कि चाहे वह किसी भी मज़हब का क्यों न हो, किसी भी प्रान्त का क्यों न हो, उसके सभी अधिकार सदा सब तरह से सुरक्षित हैं अगर हमारी एसेम्बली में इस तरह का प्रयत्न किया गया और उसमें हमें सफलता मिली, तो मैं यह भी मानता हूं कि संसार के इतिहास में यह एक इतना बड़ा काम होगा, जिसके मुकाबले की दूसरी मिसालें कम मिल सकती हैं।

यह भी याद रखने की चीज हैं और हम जो यहां आज बैठे हुए हैं, इस बात को एक लमहे के लिए भी नहीं भूल सकते हैं कि आज इस जल्से के अन्दर बहुत सी कुर्सियां खाली पड़ी है और चूंकि मुस्लिम लीग के हमारे भाई इस जल्से में आज शामिल नही हैं, हमारी जवाबदेही और हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। हमको हर कदम पर यह सोचना होगा कि अगर वह यहां हाजिर होते तो वे क्या कहते, क्या सोचते और क्या करते। इन सब बातों पर ध्यान रखकर हमें सारी कार्यवाई को चलाना होगा। साथ ही हम यह भी उम्मीद रखेंगे कि वे जल्दी ही आकर इन कुर्सियों पर बैठेंगे और मुल्क को आजाद करने में आजादी का कायदा तैयार करने में अपनी जगह लेंगे और सबके साथ मिलकर इसे आगे बढ़ायेंगे पर अगर हमारी बदकिस्मती से यह जगह खाली रहे तो हमारा यह फर्ज होगा, हमारा यह काम होगा कि हम ऐसा विधान तैयार करें, जिसमें किसी को किसी तरह की शिकायत की गुंजाइश न रहे।

स्वराज्य हासिल करने की हमारी लड़ाई बहुत दिनों से चल रही है और आज यह असेम्बली, मैं समझता हूं कि तीन शक्तियों के कारण से पैदा हुई है। पहली चीज़ है, हमारे देश के लोगों की जानें जो कुर्बान हुई हैं। आज तक हमारे कितने ही स्त्रियों और पुरुषों ने अपनी जान देकर, अपने ऊपर हर तरह की मुसीबत और तकलीफ उठाकर, हर तरह का त्याग और तपस्या करके यह हालत पैदा की है और फिस इस असेम्बली के पैदा करने में ब्रिटिश जाति का इतिहास, उनका अपना स्वार्थ और उनकी फैयाजी सबने मिलकर मदद की है। उसके अलावा आदमियत रखने वाली दुनिया की कार्रवाइयां, दुनिया का वातावरण और दुनिया की उठती हुई शक्तियां इन्होंने भी इस विधान परिषद को पैदा करने में कम हिस्सा नहीं लिया है। ये तीनों शक्तियां हमारा काम होते-होते अपना काम भी करती रहेंगी और हो सकता है कि उनमें से कुछ एक तरफ खींचें और कुछ दूसरी तरफ खींचें। मगर मेरा विश्वास है कि अन्त में हम सफल होकर रहेंगे। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह में दूरदर्शिता दे, ताकि हम एक दूसरे के दिल को शुद्ध करें और मिल करके हिन्दुस्तान को आज़ाद कर सकें।

जिन भाइयों और बहनों ने मुझे मुबारकबाद दिया है उनसे मैं क्यां कहूं? मैं शर्म से नीचे गड़ा जाता था और महसूस करता था कि चन्द मिनटों के लिए अगर मैं यहां नहीं रहता तो बेहतर होता। खासकर मैं डॉ. सिन्हा का शुक्रिया अदा इसलिए करना चाहता हूं कि उस वक्त तक उन्होंने अपनी सदारत जारी रखी और मुझ पर यह भार नहीं डाला कि मैं भाइयों से कहूं कि वे मेरी तारीफ करें। मैं आप सबको दिल से धन्यवाद देता हूं और यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि आइन्दा की कार्रवाई में जो कुछ शक्ति ईश्वर ने मुझे दी है और जो कुछ थोड़ी बुद्धि मुझे मिली है और जो कुछ संसार का थोड़ा बहुत तजुर्बा मुझे हासिल हुआ है, वह सब आपकी सेवा में अर्पित रहेगा। मैं आशा करता हूं कि आप अपनी ओर से जो कुछ मदद हमें दे सकते हैं, देते रहेंगे। ■

अस्पृश्यता का कोई शास्त्रीय आधार नहीं। परमेश्वर का दरवाजा किसी के लिए बन्द नहीं। यदि वह बन्द हो जाए तो परमेश्वर परमेश्वर नहीं।
- लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

5 अगस्त : भारत की सांस्कृतिक स्वाधीनता

5 अगस्त का सूर्योदय भारत की सांस्कृतिक स्वाधीनता को प्रकाशमान करता दिखाई दिया। विदेशी आक्रांताओं के अहंकार के प्रतीक बाबरी ढांचे के ढहने के बाद से ही राष्ट्रभक्त इस दिन के लिए प्रतीक्षारत थे। राम मंदिर के शिलान्यास के साथ ही पूरा राष्ट्र आह्लादित हो उठा। भारत की कीर्ति पताका दिग-दिगंतर फहराने लगी। देश के स्वतंत्रता दिवस से ठीक 10 दिन पूर्व प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का इस अवसर पर दिया गया व्याख्यान हम सबके लिए प्रेरणादायी है। प्रस्तुत हैं इस व्याख्यान के कुछ अंश :-

हमारे स्वतंत्रता आंदोलन के समय कई-कई पीढ़ियों ने अपना सब कुछ समर्पित कर दिया था। गुलामी के कालखंड में कोई ऐसा समय नहीं था जब आजादी के लिए आंदोलन न चला हो, देश का कोई भूभाग ऐसा नहीं था जहां आजादी के लिए बलिदान न दिया गया हो। 15 अगस्त का दिन उस अथाह तप का, लाखों बलिदानों का प्रतीक है, स्वतंत्रता की उस उत्कंठ इच्छा, उस भावना का प्रतीक है। ठीक उसी तरह, राम मंदिर के लिए कई-कई सदियों तक, कई-कई पीढ़ियों ने अखंड अविरत एक-निष्ठ प्रयास किया है। आज का ये दिन उसी तप, त्याग और संकल्प का प्रतीक है।

राम मंदिर के लिए चले आंदोलन में अर्पण भी था तर्पण भी था, संघर्ष भी था, संकल्प भी था। जिनके त्याग, बलिदान और संघर्ष से आज ये स्वप्न साकार हो रहा है, जिनकी तपस्या राममंदिर में नींव की तरह जुड़ी हुई है, मैं उन सब लोगों को आज नमन करता हूँ, उनका वंदन करता हूं। संपूर्ण सृष्टि की शक्तियां, राम जन्मभूमि के पवित्र आंदोलन से जुड़ा हर व्यक्तित्व, जो जहां है, इस आयोजन को देख रहा है, वो भाव-विभोर है, सभी को आशीर्वाद दे रहा है।

राम हमारे मन में गढ़े हुए हैं, हमारे भीतर घुल-मिल गए हैं। कोई काम करना हो, तो प्रेरणा के लिए हम भगवान राम की ओर ही देखते हैं। आप भगवान राम की अद्भुत शक्ति देखिए। इमारतें नष्ट कर दी गईं, अस्तित्व मिटाने का प्रयास भी बहुत हुआ, लेकिन राम आज भी हमारे मन में बसे हैं, हमारी संस्कृति का आधार हैं। श्रीराम भारत की मर्यादा हैं, श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं।

मुझे विश्वास है कि श्रीराम के नाम की तरह ही अयोध्या में बनने वाला ये भव्य राममंदिर भारतीय संस्कृति की समृद्ध विरासत का द्योतक होगा। मुझे विश्वास है कि यहां निर्मित होने वाला राममंदिर अनंतकाल तक पूरी मानवता को प्रेरणा देगा। इसलिए हमें ये भी सुनिश्चित करना है कि भगवान श्रीराम का संदेश, राममंदिर का संदेश, हमारी हजारों सालों की परंपरा का संदेश, कैसे पूरे विश्व तक निरंतर पहुंचे। कैसे हमारे ज्ञान, हमारी जीवन-दृष्टि से विश्व परिचित हो, ये हमारी, हमारी वर्तमान और भावी पीढ़ियों की ज़िम्मेदारी है।

हमारे यहां शास्त्रों में कहा गया है-"न्राम सदृशो राजा, प्रथिव्याम् नीतिवान् अभूत"॥ यानि कि, पूरी पृथ्वी पर श्रीराम के जैसा नीतिवान शासक कभी हुआ ही नहीं। श्रीराम की शिक्षा है-"नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना"॥ कोई भी दुखी न हो, गरीब न हो। श्रीराम का सामाजिक संदेश "प्रहृष्ट नर नारीक:,समाज उत्सव शो भित:"॥ नर-नारी सभी समान रूप से सुखी हों। श्रीराम का निर्देश है- "कच्चित् ते दयित: सर्वे, कृषि गोरक्ष जीविन:"। किसान, पशुपालक सभी हमेशा खुश रहें। श्रीराम का आदेश है-"कश्चिद्वृद्धान्चबालान्च, वैद्यान् मुख्यान् राघव। त्रिभि: एतै: वुभूषसे"॥ बुजुर्गों की,बच्चों की, चिकित्सकों की सदैव रक्षा होनी चाहिए। श्रीराम का आह्वान आवासरनाई। रखिहंउताहिप्रानकीनाई"॥ जो शरण में आए, उसकी रक्षा करना सभी का कर्तव्य है। श्रीराम का सूत्र है- "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"॥ अपनी मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर होती है। और भाइयों और बहनों, ये भी श्रीराम की ही नीति है- "भयबिनुहोइन प्रीति"॥ इसलिए हमारा देश जितना ताकतवर होगा, उतनी ही प्रीति और शांति भी बनी रहेगी।

- (5 अगस्त 2020 को अयोध्या में राम मंदिर के लिए भूमि पूजन अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए भाषण से)

पांडवों के इतिहास का साक्षी पंचकूला राममय

विधानसभा अध्यक्ष ने अयोध्या की तर्ज पर किया मंदिर का शिलान्यास

महाभारतकालीन पांडवों की स्मृतियां अपने इतिहास में समेटे पंचकूला जिला 5 अगस्त को राममय दिखाई दिया। राम मंदिर शिलान्यास दिवस पंचकूला के लिए भी यादगार लमहें छोड़ गया। राम मंदिर आंदोलन से जुड़े रहे विधानसभा अध्यक्ष श्री ज्ञान चंद गुप्ता जी ने यहां अयोध्या की तर्ज पर राम मंदिर का शिलान्यास किया। वे भाजपा और सामाजिक संस्थाओं की ओर से आयोजित मानस पाठ में भी सम्मिलित हुए। वहीं, नगर निगम की ओर से शहर को दीपावली की तरह सजाया गया। सड़क-चौराहों को विशेष रूप से लाइटिंग करके जगमग किया गया। विधानसभा अध्यक्ष 90 के दशक से ही राम मंदिर आंदोलन से जुड़े रहे हैं। इसलिए दिनभर उन्हें बधाई देने वालों का तांता लगा रहा।

विधानसभा अध्यक्ष श्री ज्ञान चंद गुप्ता जी ने 5 अगस्त को दिन की शुरुआत चंडीगढ़ भाजपा मुख्यालय कमलम में आयोजित राम यज्ञ में आहुति डाल कर की। पार्टी कार्यकर्ताओं की ओर से यह आयोजन किया गया था। इसके बाद गुप्ता पंचकूला के सेक्टर 16 स्थित अग्रवाल भवन पहुंचे जहां अग्रवाल सभा ने उनका अभिनंदन किया। राम मंदिर आंदोलन में वे शुरू से ही सक्रियता से जुड़े रहे हैं, इसलिए अग्रवाल सभा ने उनका अभिनन्दन करने का निर्णय लिया।

राम मंदिर शिलान्यास दिवस पर मुख्य कार्यक्रम सेक्टर 20 स्थित सनसिटी में हुआ। यहां ज्ञान चंद गुप्ता ने अयोध्या की तर्ज पर राम मंदिर का शिलान्यास किया। इससे पहले यहां वैदिक मंत्रों के बीच भूमि पूजन किया गया। इस मौके पर हरियाणा भाजपा की तरफ सेक्टर 2 स्थित पार्टी कार्यालय में रामायण पाठ किया गया। यहां अयोध्या में आयोजित राम मंदिर शिलान्यास कार्यक्रम का सीधा प्रसारण देखने की व्यवस्था भी की गई। ■

"राम भारत की राष्ट्रीयता के प्रतीक हैं। अयोध्या में राम मंदिर का शिलान्यास भारत की जीत है। यह दिन विदेशी दासता के प्रतीत चिह्नों के स्थानों पर राष्ट्रीय गौरव के जागरण का दिन है। इससे भारत के जन-जन में विश्वास का संचार हुआ है और उसके स्वाभिमान की जीत हुई है। राम भारत की सहिष्णुता और सुशासन के प्रतीक हैं।"

- ज्ञान चंद गुप्ता
माननीय अध्यक्ष, हरियाणा विधान सभा

रामराज्य ही क्यों!

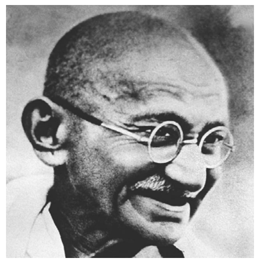

दिनेश कुमार

महात्मा गांधी के स्वराज्य की संकल्पना रामराज्य थी। दांडी मार्च के दौरान 20 मार्च, 1930 को उन्होंने हिन्दी पत्रिका 'नवजीवन' में 'स्वराज्य और रामराज्य' शीर्षक से एक लेख में लिखा- "स्वराज्य के कितने ही अर्थ क्यों न किए जाएं, तो भी मेरे नजदीक तो उसका त्रिकाल सत्य एक ही अर्थ है, और वह है रामराज्य। यदि किसी को रामराज्य शब्द बुरा लगे तो मैं उसे धर्मराज्य कहूंगा।" गांधी जी के मन में रामराज्य के प्रति इतना आग्रह क्यों था, इसे समझने के लिए गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरित मानस के उत्तरकांड को पढ़ना चाहिए। प्रस्तुत है उत्तरकांड की कुछ चौपाइयां और दोहे जिनमें हमें राम राज्य की झलक दिखाई देती है।

भाईचारा

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥

अर्थ : 'रामराज्य' में दैहिक, दैविक और भौतिक ताप किसी को नहीं सताते। सब मनुष्य परस्पर प्रेम करते हैं और वेदों में बताई हुई नीति (मर्यादा) में तत्पर रहकर अपने-अपने धर्म का पालन करते हैं।

संपन्नता

अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा। सब सुंदर सब बिरुज सरीरा॥
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना॥

अर्थ : छोटी अवस्था में मृत्यु नहीं होती, न किसी को कोई पीड़ा होती है। सभी के शरीर सुंदर और निरोग हैं। न कोई दरिद्र है, न दुःखी है और न दीन ही है। न कोई मूर्ख है और न शुभ लक्षणों से हीन ही है।

गुणी लोग

सब निर्दंभ धर्मरत पुनी। नर अरु नारि चतुर सब गुनी॥
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी। सब कृतग्य नहिं कपट सयानी॥

अर्थ : सभी दम्भरहित हैं, धर्मपरायण हैं और पुण्यात्मा हैं। पुरुष और स्त्री सभी चतुर और गुणवान्हैं। सभी गुणों का आदर करने वाले और पण्डित हैं तथा सभी ज्ञानी हैं। सभी कृतज्ञ (दूसरे के किए हुए उपकार को मानने वाले) हैं, कपट-चतुराई (धूर्तता) किसी में नहीं है।

दुख रहित व्यवस्था

राम राज नभगेस सुनु सचराचर जग माहिं।
काल कर्म सुभाव गुन कृत दुख काहुहि नाहिं॥

अर्थ : (काकभुशुण्डिजी कहते हैं-) हे पक्षीराज गुरुड़जी! सुनिए। श्री राम के राज्य में जड़, चेतन सारे जगत्में काल, कर्म स्वभाव और गुणों से उत्पन्न हुए दुःख किसी को भी नहीं होते (अर्थात् इनके बंधन में कोई नहीं है)।

भौगोलिक सीमा

भूमि सप्त सागर मेखला। एक भूप रघुपति कोसला॥
भुअन अनेक रोम प्रति जासू। यह प्रभुता कछु बहुत न तासू॥

अर्थ : अयोध्या में श्री रघुनाथजी सात समुद्रों की मेखला (करधनी) वाली पृथ्वी के एक मात्र राजा हैं। जिनके एक-एक रोम में अनेकों ब्रह्मांड हैं, उनके लिए सात द्वीपों की यह प्रभुता कुछ अधिक नहीं है।

सो महिमा समुझत प्रभु केरी। यह बरनत हीनता घनेरी॥
सोउ महिमा खगेस जिन्ह जानी॥ फिरि एहिं चरित तिन्हहुँ रति मानी॥

अर्थ : बल्कि प्रभु की उस महिमा को समझ लेने पर तो यह कहने में (कि वे सात समुद्रों से घिरी हुई सप्त द्वीपमयी पृथ्वी के एकच्छत्र सम्राट हैं) उनकी बड़ी हीनता होती है, परंतु हे गरुड़जी! जिन्होंने वह महिमा जान भी ली है, वे भी फिर इस लीला में बड़ा प्रेम मानते हैं।

एकल विवाह

सब उदार सब पर उपकारी। बिप्र चरन सेवक नर नारी॥
एकनारि ब्रत रत सब झारी। ते मन बच क्रम पति हितकारी॥

अर्थ : सभी नर-नारी उदार हैं, सभी परोपकारी हैं और विद्वानों का सम्मान करने वाले हैं। सभी पुरुष मात्र एक पत्नीव्रती हैं। इसी प्रकार स्त्रियां भी मन, वचन और कर्म से पति का हित करने वाली हैं।

कानून व्यवस्था

दंड जतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज।
जीतहु मनहि सुनिअ अस रामचंद्र कें राज॥

अर्थ : श्री रामचंद्रजी के राज्य में दण्ड केवल संन्यासियों के हाथों में है और भेद नाचने वालों के नृत्य समाज में है और 'जीतो' शब्द केवल मन के जीतने के लिए ही सुनाई पड़ता है (अर्थात्राजनीति में शत्रुओं को जीतने तथा चोर-डाकुओं आदि को दमन करने के लिए साम, दान, दण्ड और भेद- ये चार उपाय किए जाते हैं। रामराज्य में कोई शत्रु है ही नहीं, इसलिए 'जीतो' शब्द केवल मन के जीतने के लिए कहा जाता है। कोई अपराध करता ही नहीं, इसलिए दण्ड किसी को नहीं होता, दण्ड शब्द केवल संन्यासियों के हाथ में रहने वाले दण्ड के लिए ही रह गया है तथा सभी अनुकूल होने के कारण भेदनीति की आवश्यकता ही नहीं रह गई। भेद, शब्द केवल सुर-ताल के भेद के लिए ही कामों में आता है।)

वन्य जीव संरक्षण

फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन। रहहिं एक सँग गज पंचानन॥
खग मृग सहज बयरु बिसराई। सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई॥

अर्थ : वनों में वृक्ष सदा फूलते और फलते हैं। हाथी और सिंह (वैर भूलकर) एक साथ रहते हैं। पक्षी और पशु सभी ने स्वाभाविक वैर भुलाकर आपस में प्रेम बढ़ा लिया है॥1॥

पर्यावरण संरक्षण

कूजहिं खग मृग नाना बृंदा। अभय चरहिं बन करहिं अनंदा॥

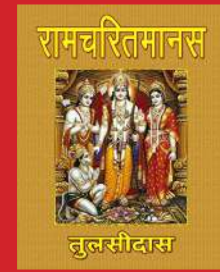

रामचरित मानस 15वीं शताब्दी के कवि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा लिखा गया महाकाव्य है। गोस्वामी जी ने रामचरित मानस के बालकाण्ड में लिखा है कि उन्होंने रामचरित मानस की रचना का आरम्भ अयोध्या में विक्रम संवत 1631 (1574 ईस्वी) में रामनवमी के दिन किया था। गीताप्रेस गोरखपुर के संपादक श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार के अनुसार रामचरितमानस को लिखने में गोस्वामी तुलसीदास जी को 2 वर्ष 7 माह 26 दिन का समय लगा था। उन्होंने इसे संवत् 1633 (1576 ईस्वी) के मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में राम विवाह के दिन पूर्ण किया था। इस महाकाव्य की भाषा अवधी है।

सीतल सुरभि पवन बह मंदा। गुंजत अलि लै चलि मकरंदा॥

अर्थ : पक्षी कूजते (मीठी बोली बोलते) हैं, भाँति-भाँति के पशुओं के समूह वन में निर्भय विचरते और आनंद करते हैं। शीतल, मन्द, सुगंधित पवन चलता रहता है। भौंरे पुष्पों का रस लेकर चलते हुए गुंजार करते जाते हैं॥2॥

लता बिटप मागें मधु चवहीं। मनभावतो धेनु पय स्रवहीं॥
ससि संपन्न सदा रह धरनी। त्रेताँ भइ कृतजुग कै करनी॥

अर्थ : बेलें और वृक्ष माँगने से ही मधु (मकरन्द) टपका देते हैं। गायें मनचाहा दूध देती हैं। धरती सदा खेती से भरी रहती है। त्रेता में सत्ययुग की करनी (स्थिति) हो गई।

प्राकृतिक संसाधनों का दोहन

प्रगटीं गिरिन्ह बिबिधि मनि खानी। जगदातमा भूप जग जानी॥
सरिता सकल बहहिं बर बारी। सीतल अमल स्वाद सुखकारी॥

अर्थ : समस्त जगत्के आत्मा भगवान्को जगत्का राजा जानकर पर्वतों ने अनेक प्रकार की मणियों की खानें प्रकट कर दीं। सब नदियां श्रेष्ठ, शीतल, निर्मल और सुखप्रद स्वादिष्ट जल बहाने लगीं॥4॥

प्रकृति का सहयोग

सागर निज मरजादाँ रहहीं। डारहिं रत्न तटन्हि नर लहहीं॥
सरसिज संकुल सकल तड़ागा। अति प्रसन्न दस दिसा बिभागा॥

अर्थ : समुद्र अपनी मर्यादा में रहते हैं। वे लहरों द्वारा किनारों पर रत्न डाल देते हैं, जिन्हें मनुष्य पा जाते हैं। सब तालाब कमलों से परिपूर्ण हैं। दसों दिशाओं के विभाग (अर्थात्सभी प्रदेश) अत्यंत प्रसन्न हैं।

बिधु महि पूर मयूखन्हि रबि तप जेतनेहि काज।
मागें बारिद देहिं जल रामचंद्र कें राज॥

अर्थ : श्री रामचंद्रजी के राज्य में चंद्रमा अपनी (अमृतमयी) किरणों से पृथ्वी को पूर्ण कर देते हैं। सूर्य उतना ही तपते हैं, जितने की आवश्यकता होती है और मेघ माँगने से (जब जहाँ जितना चाहिए उतना ही) जल देते हैं।

धर्मसापेक्ष शासक

कोटिन्ह बाजिमेध प्रभु कीन्हे। दान अनेक द्विजन्ह कहँ दीन्हे॥
श्रुति पथ पालक धर्म धुरंधर। गुनातीत अरु भोग पुरंदर॥

अर्थ : प्रभु श्री रामजी ने करोड़ों अश्वमेध यज्ञ किए और विद्वानों को अनेकों दान दिए। श्री रामचंद्रजी वेदमार्ग के पालने वाले, धर्म की धुरी को धारण करने वाले, (प्रकृतिजन्य सत्व, रज और तम) तीनों गुणों से अतीत और भोगों (ऐश्वर्य) में इन्द्र के समान हैं।

धर्मनिष्ठ समाज

चारिउ चरन धर्म जग माहीं। पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं॥
राम भगति रत नर अरु नारी। सकल परम गति के अधिकारी॥

अर्थ : धर्म अपने चारों चरणों (सत्य, शौच, दया और दान) से जगत में परिपूर्ण हो रहा है, स्वप्न में भी कहीं पाप नहीं है। पुरुष और स्त्री सभी रामभक्ति के परायण हैं और सभी परम गति (मोक्ष) के अधिकारी हैं। ■

सार्वजनिक जीवन में जरूरी है व्यक्तिगत स्वास्थ्य

दिनचर्या और ऋतुचर्या पर टिका रोग प्रतिरोधक क्षमता का विज्ञान

जुगनू
योग आचार्या

जनप्रतिनिधियों का अधिकतर समय लोगों के बीच बीतता है। सार्वजनिक जीवन ही उनकी पहचान बन जाता है। इसमें वे इतने डूब जाते हैं कि कई बार उनसे व्यक्तिगत जीवन की अनदेखी हो जाती है। यही कारण है कि दूसरों की हर सुख सुविधा का ध्यान रखने वाले जनप्रतिनिधि अपने स्वास्थ्य को भूल जाते हैं। सदन संवाद के इस स्थायी कॉलम में हम आपको स्वास्थ्य को लेकर सचेत करते रहेंगे। मौसम की आवश्यकता अनुसार स्वास्थ्य पर जानकारी देंगे। पत्रिका का पहला अंक बरसात के मौसम में निकल रहा है। इसलिए इस बार का विषय है रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के तौर तरीके।

आपने कई बार देखा होगा कि कुछ लोग हमेशा चुस्त-दुरुस्त नजर आते हैं जबकि उन्हीं परिस्थितियों में अन्य लोग जल्दी-जल्दी बीमार हो जाते हैं। दोनों की कार्यशैली में भी व्यापक अंतर आपको दिखाई देगा। अक्सर स्वस्थ रहने वाले लोग एक ओर जहां जीवन को भरपूर जीते हैं, वहीं वे परिवार समाज के लिए भी ज्यादा उपयोगी साबित होते हैं। इसलिए स्वयं को स्वस्थ रखना न केवल निजी आवश्यकता है, अपितु ऐसा कर हम समाज पर भी अप्रत्यक्ष रूप से उपकार करते हैं।

जो लोग सामान्यत: स्वस्थ रहते हैं, उसका प्रमुख कारण है उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता। इसका सीधा सा अर्थ यह भी हुआ कि जो लोग जल्दी-जल्दी बीमारियों की चपेट में आ जाते हैं, उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर हो चुकी है। रोग प्रतिरोधक क्षमता मानव एवं अन्य प्राणियों को प्रकृति प्रदत्त वरदान है। यह व्यवस्था शरीर को जीवाणुओं, विषाणुओं और माइक्रोब्स से बचाती है। इसका कम ज्यादा होना यह किसी भी व्यक्ति की जीवनशैली पर निर्भर करता है। इस जीवनशैली के प्रमुख दो आयाम हैं दिनचर्या और ऋतुचर्या। इन दोनों को साध कर कोई भी व्यक्ति अपने को चुस्त-दुरुस्त रख सकता है। दिनचर्या का संबंध हमारी रोजमर्रा की जीवनशैली से जबकि ऋतुचर्या का संबंध हमारे खान-पान से है।

पीजीआई चंडीगढ़ में आहार विज्ञान विभाग में मुख्य आहार विशेषज्ञ डॉ. सुनीता मल्होत्रा कहती हैं कि बारिश के मौसम में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाकर ही बीमारियों से बचा जा सकता है। इसके लिए जरूर है संतुलित और पौष्टिक खानपान। डॉ. सुनीता मल्होत्रा के मुताबिक इसके लिए जरूरी है कि शरीर को विटामिन ए, बी, सी, डी, ई, आयरन और कैल्शियम। इसके लिए खाने में मोटा अनाज, दालें, सब्जियां, फल, दूध और दूध से बनी वस्तुओं को शामिल करना आवश्यक है। इसके साथ ही उनका मानना है कि अपने देश में शाकाहारी लोग प्रोटीन की मात्रा भी पूरी नहीं लेते। किसी भी व्यक्ति का जितने किलोग्राम वजन हो, उतने ग्राम प्रोटीन प्रतिदिन ग्रहण करना आवश्यक है। दुग्ध उत्पाद, सोयाबीन, दालें प्रोटीन के मुख्य स्रोत हैं। उन्होंने बाहर की कटी हुई चीजें खाने से सख्त मना किया है। इसके साथ ही पानी की मात्रा का विशेष ध्यान रखें। इसे लस्सी, नारियल, सत्तु इत्यादि किसी भी रूप में ग्रहण कर सकते हैं।

रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए जितना ध्यान खानपान पर देना आवश्यक है, उतनी ही आवश्यक है दिनचर्या। विशेषज्ञों की मानें तो 24 घंटे की दिनचर्या में 40 से 45 मिनट योग, व्यायाम इत्यादि आवश्यक है। जितना संभव हो रात को जल्दी सोएं और प्रात: जल्दी उठे, लेकिन इस सारे में ध्यान रहे कि नींद कम से कम 8 घंटे की अवश्य हो।

पंचकूला के जिला आयुर्वेद अधिकारी डॉ. दिलीप मिश्रा के मुताबिक रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए आंतों का साफ रहना आवश्यक है। इसके लिए हरड़ का सेवन गुणकारी है। सूर्योदय से पहले योगाभ्यास करें। डॉ. दिलीप मिश्रा का कहना है वर्षा ऋतु में अग्नि मंद हो जाती है, इसलिए इस दौरान लघु आहार का सेवन करना चाहिए। इसके लिए सेंधा, नमक, गुड़, शहद उपयोगी है। मूंग की दाल भी लघु आहार की श्रेणी में आती हैं। इसके अलावा उड़द की दाल और पत्तेदार सब्जियां जैसे पालक इत्यादि बिल्कुल न खाएं। वर्षा ऋतु में पत्तेदार सब्जियां खाने से न्यूकश अर्थात आंव बन जाती है। अश्वगंधा की टेबलेट भी काफी उपयोगी है, जो हरियाणा आयुष विभाग के तहत संचालित राजकीय आयुर्वेदिक औषधालय एवं पंचकर्मा केंद्रों पर उपलब्ध हैं। ■

इस माह का स्वास्थ्य सूत्र

भाद्रपद माह में दही या दही से बनी चीजें न खाएं। वैज्ञानिक तर्क है कि इस माह में दही में बहुत ज्यादा बैक्टीरिया होते हैं। भादों में तिल का प्रयोग लाभकारी है

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए आवश्यक तत्व और उनके स्रोत

विटामिन

- **ए :** दूध व दुग्ध उत्पाद
- **बी :** अनाज छिलका
- **सी :** शिमला मिर्च, नींबू व अन्य खट्टे फल
- **डी :** सूर्य की धूप, अंडे, मछली, चिकन
- **ई :** बादाम अखरोट, पिस्ता एवं अन्य मेवे

आयरन और कैल्शियम : दूध , सोयाबिन

रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होने के प्रमुख कारण

- शारीरिक श्रम का अभाव, चर्बी जमा होना।
- फास्टफूड, जंकफूड का ज्यादा सेवन।
- धुम्रपान, शराब, ड्रग आदि का सेवन।
- अंग्रेजी दवाओं का लंबे समय तक सेवन।
- कम नींद लेना या अधिक देर तक सोना।

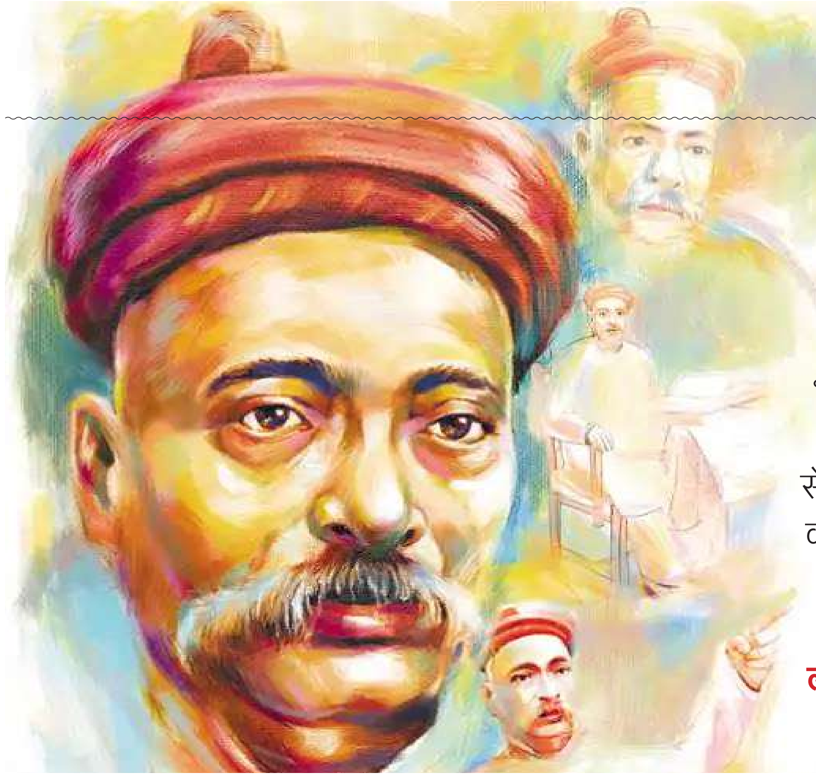

भारतीयता और इसके नायकों पर लोकमान्य के विचार

भारत में महापुरुषों की श्रृंखला अटूट है। यहां कि मिट्टी की तासीर ही ऐसी है कि कोई भी कालखंड महापुरुषों से विहीन नहीं रहा। इन महापुरुषों की दृष्टि सदैव समाज का मार्गदर्शन करती रही है। सदन संदेश के इस स्थायी स्तभ में हम आधुनिक भारत के महापुरुषों के विचारों को अक्षरश : प्रस्तुत करेंगे। प्रथम अंक में प्रस्तुत हैं **लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक** की आधुनिकता और भारत के पुराने मूल्यों पर दृष्टि–

भारत के प्राचीन मूल्य जरूरी है : कोई भी सच्चा राष्ट्रवादी प्राचीन आधार-शिलाओं पर ही पुनर्निर्माण करना चाहता है। वह सुधार, जो प्राचीनता के प्रति अनास्था एवं अनादर के भाव पर टिका है, टिकाऊ प्रतीत नहीं होता। इसलिए कोई भी सुधार कार्य चालू करने से पहले मैं किसी सुनिश्चित राष्ट्रीय हित को अक्षुण्य रखने और समृद्ध करने की कोशिश करता हूं। आयरलैंड की राजनीति में भी इसी प्रकार के परिवर्तन हुए हैं।....

आधुनिकीकरण या पाश्चात्यकरण : हम सुधार के नाम पर अपनी संस्थाओं का अंग्रेजीकरण व अराष्ट्रीयकरण नहीं करना चाहते। हमारा ध्येय अपने देश की उन्नति ही है, ताकि वह संसार के सभ्य देशों की बराबरी कर सकें। लेकिन जहां डॉ. परांजपे के दल के लोग चाहते हैं कि हम विदेशी तरीकों को अपनाएं, यहां तक कि भगवान की प्रार्थना भी हम पाश्चात्य ढंग से ही करें, हम राष्ट्रवादी चाहते हैं कि राष्ट्रीय भावनाओं की रक्षा की जाए और हमारी प्राचीन प्रथा में जो कुछ अच्छा है, उस सबको अपने राष्ट्रीय उत्थान के लिए प्रगति और सुधार में बाधा डाले बगैर ही ग्रहण करें। संयम से तात्पर्य असंभव या सुदूरस्थ आदर्शों के पीछे व्यर्थ में न दौड़कर, प्रतिदिन समझौते एवं औचित्य की भावना से परिपूर्ण होकर, अपने हाथ में आए काम को संपादित करते हुए स्वतः विकास के उद्देश्य से, कदम-से-कदम आगे बढ़ने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना है।

धार्मिक भेदभाव का कारण : जो यह कहते हैं कि गणपति की झांकियां मुसलमानों के ताजियों की नकल है, उन्होंने आषाढ़ और कार्तिक की एकादशी की भजनमंडलियों को नहीं देखा है। लेजिम का खेल, नगाड़ों की गड़गड़ाहट और इसी प्रकार के अन्य कार्य प्रायः हर मेले में होते हैं। पिछले दो-तीन सौ वर्षों से बहुत-से हिंदू मुहर्रम के अवसर पर मुसलमान पीरों की मनौती मानते रहे हैं। कारण हम हर धर्म का मान करते हैं। लेकिन मुसलमान पुराने मेलजोल को छोड़कर शरारती लोगों के बहकावे में आकर हिंदू साधुओं को नियमित रूप से तंग करने लगे। इससे भेदभाव उत्पन्न होना अनिवार्य ही था।

गणेशोत्सव राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति : तिलक ने कहा धार्मिक विषयों पर चिंतन और पूजा तो एकांत में भी संभव है, किंतु जनता को पुनर्जागृत करने के लिए कुछ प्रदर्शन आवश्यक है। इसी राष्ट्रीय भावना के कारण यह उत्सव केवल पारिवारिक त्योहार न रहकर शीघ्र ही सार्वजनिक पर्व बन गया। यह परिवर्तन ध्यान देने योग्य है, क्योंकि हिन्दू धर्म में पूजा अधिकतर वैयक्तिक या पारिवारिक रूप में होती है - ईसाई धर्म या इस्लाम की भांति हिंदुओं में सामूहिक रूप से पूजा नहीं होती। किंतु राष्ट्रीयता की भावना का विकास होने से गणपति उत्सव शीघ्र ही सामूहिक रूप पा गया। जब ईसाई धर्मोपदेशक अपने भाषणों में राजनैतिक विषयों की चर्चा कर सकते हैं तो कोई कारण नहीं कि इस उत्सव में मिलने वाले भी देश की राजनैतिक परिस्थितियों की चर्चा न करें। यदि उत्सव में कुछ गीत अन्य विषयों के गाए जाते हैं तो इसमें कोई बुराई नहीं। इस धार्मिक पर्व को इसी कारण केवल राजनैतिक प्रचार का बहाना बताना अनुचित है।

शिवाजी से उत्तम चरित्र मिलना असंभव : वीर पूजा मानव का स्वभाव है और अपनी राजनैतिक आकांक्षाओं की मूर्त करने के लिए एक भारतीय महावीर के आदर्श की हमें आवश्यकता थी। इसके लिए शिवाजी से उत्तम चरित्र मिलना असंभव था। हम अकबर या भारतीय इतिहास के अन्य चरित्र की याद में उत्सव आरंभ करने के विरुद्ध नहीं। इनका भी अपना एक महत्व होगा, किंतु शिवाजी का नाम सारे देश के लिए एक विशिष्ट महत्व लिए हुए है और हर एक देशवासी का यह कर्तव्य है कि वह इस चरित्र को विस्मृत और विकृत न होने दे। हर महापुरुष, चाहे वह भारत का हो या यूरोप का, अपने युग के अनुरूप ही कार्य करता है। यह सिद्धांत यदि हम मान लें तो हमें शिवाजी के जीवन में कोई भी कार्य ऐसा नहीं मिलेगा जिसकी हम निंदा कर सकें। शिवाजी के हृदय में स्वतंत्रता की जो भावना आरंभ से अंत तक थी, उसी भावना के कारण वह राष्ट्र के आदर्श माने जाते हैं। ■

किशोर कान्त
स्वतंत्र लेखक एवं सामाजिक कार्यकर्ता

पुस्तक परिचय

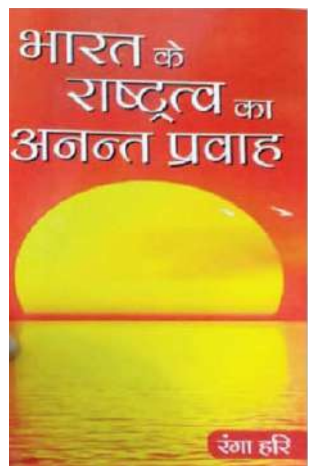

लेखक : रंगाहरि
प्रकाशक : विमर्श प्रकाशन, दिल्ली
पृष्ठ : 216
मूल्य : 100 रु.

आज अपने देश के, राष्ट्र के स्वत्व के संदर्भ में होने वाली आलोचनात्मक टिप्पणियों और उन्हें स्वीकार कर सत्य मानने की प्रवृत्ति से ध्यान में आता है कि टिप्पणीकार और उनके पक्ष में खड़े होने वाले समाज को अपने देश के स्वत्व की सटीक जानकारी शायद कम है और संभवत: नहीं भी। इसी पृष्ठभूमि पर एक सार्थक विवेचन है 'भारत के राष्ट्रत्व का अनंत प्रवाह'।

राष्ट्र को नेशन का पर्याय मानने, राज्य को राष्ट्र के समतुल्य समझने के कारण बहुत सारे भ्रम, संशय उत्पन्न होते हैं। वास्तव में हमारे राष्ट्र का प्रादुर्भाव अंग्रेजों के आने के बाद, उनके द्वारा अखिल भारतीय व्यवस्थाएं प्रारम्भ करने के फलस्वरूप नहीं हुआ, वरन् यह सहस्राब्दियों से प्रवहमान एक समुन्नत राष्ट्र है। सनातन राष्ट्र को मान्य करने वालों तथा नवराष्ट्रवादियों का भिन्न चिंतन देश में अनेक प्रकार के विवाद उत्पन्न करता रहा है।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रथम अध्याय में विद्या-व्यसनी, सतत अभ्यासक मान्यवर रंगाहरि जी ने राष्ट्र, राष्ट्र के विकास, राज्य की उत्पत्ति, राष्ट्र-राज्य संबंध, अंग्रेजों द्वारा किया गया मंत्रविप्लव, उससे बाधित व अबाधित महापुरुष, समाज में सहजता से बहती गुप्तगंगा आदि उन्नीस तरंगों पर बहते अनंत प्रवाह में गहरे उतरकर भारत के राष्ट्रत्व की संदर्भ सहित उद्धरणों देते हुए विशद चर्चा की है।

भारत में 'राष्ट्र' कल्पना कितनी पुरानी है? इसका विचार, चिंतन, इतिहास व साहित्य-ग्रंथों का परिशोधन करते समय ध्यान आता है कि विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद में राष्ट्र का उल्लेख मिलता है। यह उल्लेख अनायास नहीं आया, बल्कि कई बार है और आठों विभक्तियों के साथ है। उसके बाद ब्राह्मणग्रन्थों, पुराणों, रामायण, महाभारत आदि के काल में उल्लेख स्पष्टतर होता गया है। रंगाहरि जी का उद्‌बुद्ध विवेचन इस ध्यातव्य को कुशलता से रेखांकित करता है कि स्वर्विद, भद्रेच्छु, विश्वहृदयी ऋषियों के तप से वेदकालोत्पन्न भारत राष्ट्र, सहस्राब्दियों पश्चात् यूरोपोत्पन्न नेशन से बिल्कुल भिन्न है। राष्ट्र कल्पना का आविर्भाव भावात्मक है, शांतिजन्य है जबकि नेशन प्रतिक्रियाजन्य है, हिंसाजन्य है। लोभ, मोह, द्वेष, त्वेष आदि नकारात्मक शक्तियां हैं नेशन के जन्म के कारण; जबकि शांति, सुख, आनंद, आदि दैवी संपत्तियां हैं राष्ट्र के जन्म के कारण। अत: राष्ट्र का अंग्रेजी भाषांतर नेशन नहीं हो सकता तथा नेशन का राष्ट्र।

दूसरे अध्याय में मनमोहन वैद्य जाति, वर्ण, महिला संबंधी प्रश्नों की चर्चा के परिप्रेक्ष्य में हिन्दुत्व की दृष्टि से संक्षिप्त, किंतु सारगर्भित व्याख्या करते हैं। न केवल दर्शन या विचार, अपितु हमारे पूर्वज महापुरुषों के व्यवहार के उदाहारण भी लक्षणीय हैं। वैद्य जी का संज्ञान ध्यान दिलाता है कि चर्चा में खड़े ये प्रश्न हिंदुत्व की देन नहीं, वरन् हिंदुत्व को ठीक से न समझने और उससे दूर जाने के कारण हैं।

श्री मिलिंद ओक द्वारा आज हिंदुत्व के समक्ष आ रहीं या आनेवाली अंतर्बाह्य चुनौतियों की सटीक व सोद्धरण जानकारी और उनके संदर्भ में हमारे विचारणीय और करणीय की ओर किया गया अंगुलिनिर्देश, तृतीय अध्याय का प्रतिपाद्य विषय है। चौथे अध्याय में गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. भगवती प्रकाश जी द्वारा हिंदुत्व के समग्र दर्शन के संदर्भ में कृषि, पौधरोपण, पारिस्थिकी तंत्र, विकास की दशा व दिशा, रोजगार आदि का वर्णन; पाठकों को गंभीर चिंतन, समाज प्रबोधन व निजी व्यवहार में ढालने हेतु प्रवृत्त करने में सहयोगी हो सकेगा। पुस्तक के अंतिम भाग में संगोष्ठी में उपस्थित महानुभावों की जिज्ञासाओं का रंगाहरि जी द्वारा किये गए समाधान से पाठकवृंद अपने मन में समय-समय पर उठनेवाले प्रश्नों के उत्तर भी प्राप्त कर सकेंगे।

मनमोहन वैद्य ने प्रस्तावना में इस अनंत प्रवाह को रेखांकित करते हुए लिखा गया यह उद्धरण वास्तव में इस पुस्तकीय शरीर की आत्मा सदृश्य है – "भारत के लोगों की अनेक विशेषताओं में से एक यह है कि यहां के लोगों की पहचान, मूल्य-व्यवस्था, जीवनदृष्टि, जीवनादर्श आदि में अति प्राचीन समय से एक सातत्य बना हुआ है या कहिए, जीवन एक अविरल प्रवाह के समान बह रहा है। इसके मार्ग में अनेक बाधाएं आईं, लाई गईं। उन बाधाओं को चीरकर, कभी उन्हें किनारे राह देते हुए, यह प्रवाह सतत आगे बढ़ता ही गया। अनेक छोटे-बढ़े बहाव इसमें आकर मिले। इनको अपने में समाकर, समृद्ध होकर, फिर भी अपनी पहचान बनाकर रखता हुआ, समाज का यह जीवन-प्रवाह बहता रहा, बढ़ता रहा।"

एक बड़े ग्रंथ के लिए अपेक्षित विषय को लघ्वाकार पुस्तक में समेटने का प्रयास वस्तुतः अभिनन्दनीय है। यह प्रतीति होती है कि समाज प्रबोधन के अनेक विषयों को प्रस्तुत करने, लिखने के लिए यह पुस्तक ज्ञान कोष का कार्य कर सकेगी। यह संग्रहणीय पुस्तक शोधपरक अध्ययनकर्ताओं के निजी पुस्तकालय का भाग बनेगी। ■

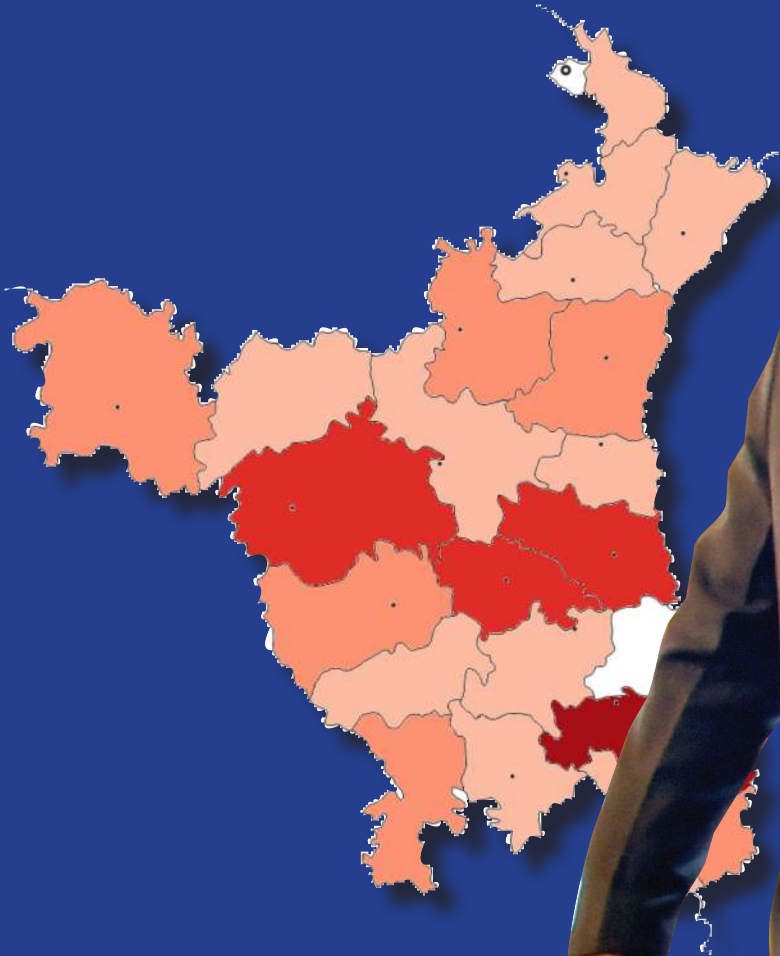

"

कोविड 19 के वैश्विक संकट से निपटने के लिए हरियाणावासी जिस प्रकार कर्तव्यपरायणता का परिचय दे रहे हैं, उससे हृदय में गौरव का भाव जागृत होना स्वाभाविक है। लॉकडाउन के दौरान जनता ने प्रशासन का सहयोग अनुशासन के प्रति प्रतिबद्धता जताई तो अनलॉक के दौरान सावधानी बरतते हुए लोग कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ रहे हैं, जो अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए आवश्यक है।

- ज्ञान चन्द गुप्ता

माननीय अध्यक्ष, हरियाणा विधान सभा

"